स्थापित 1968

अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा का मुख पत्र

₹5

# श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका

सामाजिक चेतना एवं जागरुकता के लिये सजग मासिक पत्रिका

(पल्लीवाल, जैसवाल, सैलवाल सम्बन्धित जैन समाज)

अंक 6 ✦ प्रकाशन तिथि : 25 दिसम्बर 2020 ✦ वर्ष 9 ✦ कुल पृष्ठ 44 ✦ मूल्य ₹5

## नव वर्ष की मंगल कामना

# स्व. श्री स्वरूप चन्द जी जैन (मारसन्स)

**(19 अगस्त 1927 – 31 अगस्त 2016)**

## जैन समाज के लिये आपका योगदान एवं समाज को एक सूत्र में बांधे रखने का अन्तिम सन्देश सदैव स्मरणीय रहेगा।

## आपका प्रेरणामय जीवन हमारे लिए सदैव पथ प्रदर्शक रहेगा।

MARSON'S

ISO 9001:2000 CERTIFIED COMPANY

समस्त परिवारीजन
स्टाफ एवं कर्मचारीगण

**MARSON'S ELECTRICAL INDUSTRIES**

**(Prop. MEI Power Pvt. Ltd.)**

www.marsonselectricals.com • E-mail : info@marsonselectricals.com

1/189, Delhi Gate, Civil Lines, Agra-282002 (India)

Ph : +91-562-2520027, 2850812 • Fax : +91-562-2851306

**Works :**

Mathura Road, Artoni, Agra - 282007 (India)

Ph : +91-2641448, 2642327-28 • Fax : +91-562-2641435




TRANSFORMERS EXPORTED TO OVER 15 COUNTRIES

सामाजिक चेतना एवं जागरुकता के लिये सजग

# श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका

अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा का मुख पत्र

(पल्लीवाल, जैसवाल, सैलवाल सम्बन्धित जैन समाज)

Email : shripalliwaljain.patrika@gmail.com

मूल्य ₹ 5/-

*अंक 6 ✦ 25 दिसम्बर 2020 ✦ वर्ष 9*

*कुल पृष्ठ : 44*

*पूर्व प्रकाशन मथुरा से, सम्प्रति जयपुर से प्रकाशित*

## महासभा पदाधिकारी

**श्री आर.सी. जैन** *( अध्यक्ष )*
*( सेवानिवृत्त आई.ए.एस. )*
एन-19, आदिनाथ नगर, जे.एल.एन. मार्ग,
जयपुर (राज.)-302018
मोबा. : 9414279070, 9829999335
E-mail : rcjainras@gmail.com

**श्री राजीव रतन जैन** *( महामंत्री )*
301-ए, सुख सागर अपार्टमेन्ट, 4, जानकी नगर मेन,
इन्दौर (म.प्र.)-452001, मोबा.: 9425110204
E-mail : jainrajeevratan@gmail.com

**श्री अजीत जैन** *( अर्थमंत्री )*
1द39, काला कुंआ हा.बोर्ड, अलवर (राज.)-301002
फोन : 0144-2360115, मोबा.: 9413272178
E-mail : akjain2021@yahoo.in

## पत्रिका प्रबन्ध एवं सम्पादक मण्डल

**डॉ. अनुपम जैन** *(परामर्शदाता)*
'ज्ञानछाया', डी-14, सुदामानगर, इन्दौर-452009
फोन : 0731-2797790, मोबा.: 9425053822
E-mail : anupamjain3@rediffmail.com

**श्री चन्द्रशेखर जैन** *(संयोजक)*
86, मगन विला, श्री विहार कॉलोनी, होटल क्लार्क
आमेर के पीछे, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर-302018
फोन : 0141-2553272, मोबा.: 9829134926
E-mail : csjain30@yahoo.co.in

**श्री प्रकाश चन्द जैन** *(सम्पादक)*
78, बैंक कॉलोनी, महेश नगर विस्तार ''बी''
गोपालपुरा बाईपास, जयपुर-302015
मोबा.: 9828374013
E-mail : pcjain49@gmail.com

**श्री पारस जैन गहनौली** *(सह-सम्पादक)*
बी-204बी, 10-बी स्कीम, गोपालपुरा बाईपास,
जयपुर-302018, मोबा.: 9928715869

**श्री महेश चन्द जैन** *(अर्थ संयोजक)*
36-सी, कृष्णा विहार विस्तार, गोपालपुरा बाईपास,
जयपुर-302015, मोबा.: 9828288830
E-mail : 3466mahesh@gmail.com

*संयोजक की कलम से....*

## समाज की ज्वलंत समस्या

स्नेहिल बंधुओं, हमारा सौभाग्य है कि हम सभी को जैन कुल मिला है एवं सभी महावीर के अनुयायी हैं 'परस्परोग्रहो जीवानाम' एवं 'जियो और जी दो' जैसे स्लोगन की वजह से आज दुनिया भर में हम सभी को सम्मान की नजरों देखा जाता है। जैन सिर्फ सादा जीवन उच्च विचारों के साथ आगे बढ़ने और किसी से न उलझने में विश्वास रखता है। अहिंसा परमो धर्म ही हमारी पहचान है।

जैन समाज आर्थिक रूप से कई अन्य समाजों के मुकाबले में सम्पन्न है, अर्थात धनी है, ज्ञानी है, दानी है, सुस्वभावी है, शिक्षित है, ईमानदार है, मिलनसार एवं मेहनती है। हर सामर्थ्य है, हमारे पास कुशल नेतृत्व एवं सकारात्मक सोच है, हम सभी के पास भरपूर ऊर्जा है और सभी तन मन एवं धन के साथ कार्यों को करने में सक्षम हैं। हमारे आपसी रिश्ते मजबूत हैं। हम सभी प्रकार के निर्णय लेने में योग्य एवं सक्षम हैं तो क्यों न हम, सब मिलकर योजनाबद्ध तरीके से समाज के ज्वलंत मुद्दों पर सकारात्मक सोच व पूरी ऊर्जा के साथ समाज की उन कुरीतियों पर परिचर्चा के साथ कार्य करें, जिससे इन कुरीतियों को मिटाया जा सके।

आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूँगा कि आज हमारा समाज विभिन्न फिरको में विभाजित है जिसकी वजह से आज हमारी शक्ति व एकता में कहीं न कहीं कमी आई है। पूर्व के वर्षों की अगर हम बात करते हैं एवं उनसे तुलना करते हैं तो जैन समाज का प्रभाव पहले से कम हुआ है। जिसके फलस्वरूप समाज में करीतियों ने अपने पांव पसार दिए हैं जो हम सभी के लिए चिंता का विषय है, जिसे नियंत्रित करना होगा। वैसे तो समाज में बहुत सारी कुरीतियां हैं उन सभी पर चर्चा करना संभव नहीं है परंतु उनमें से कुछ महत्वपूर्ण कुरीतियाँ हैं जिन पर इस पुस्तिका के माध्यम से प्रकाश डालने का प्रयास किया है। वर्तमान में, समाज में एक नया प्रचलन अन्तर्जातीय विवाह का प्रारम्भ हुआ है जिससे आप और हम भली भांति परिचित हैं इसके दूरगामी

परिणाम भी हमें देखने को मिल रहे हैं कि 'हमारी रिश्तेदारी हर जाति व समाज में होने लगी है' यह कटु सत्य है।

इस विषय पर हम सभी को मन्थन करना होगा। इसी तरह बढ़ते भैतिकवाद, लड़के-लड़कियों में भेदभाव, आसमान छूती महत्वाकांक्षाओं और तनावपूर्ण पेशेवर जिंदगी ने मनुष्य को स्वार्थी और आत्म केन्द्रित बना दिया है। पति-पत्नी की एक-दूसरे से आशाऐं एवं अपेक्षाएँ बढ़ गई हैं। जब उन्हें लगता है कि उनकी उम्मीदें पूरी नहीं हो रही हैं तो वे धैर्य रखने व एक-दूसरे को समझने की बजाय विवाह विच्छेद करना बेहतर समझते हैं। अब प्यार और विवाह की परिभाषा बदल गई है। अधिकांश दंपती आपसी संबंधों की गर्माहट को भूल कर एक अनजानी खुशी की तलाश में भटक रहे हैं। कई बार तो विवाह के कुछ समय बाद ही पति-पत्नी के बीच मन मुटाव शुरू हो जाता है।

इस तरह के किस्से अक्सर सुनने को मिलते हैं तब कभी-कभी लगता है कि विवाह का मकसद केवल एक दूसरे को नीचा दिखाना एवं अपने अहंकार को नीचे नहीं गिरने देने का रह गया है। पहले संयुक्त परिवार में बात वहीं समाप्त कर दी जाती थी, पर अब यह संभव नहीं है। यही वजह है कि अब विवाह के नाम पर पढ़े-लिखे युवक-युवतियों के मन में अनजाना भय भी घर करने लगा है। परिचित और करीबी रिश्तेदार भी पहले की तरह रिश्ते कराने में घबराने लगे हैं। विवाह दो परिवारों का संबंध न रहकर लेन-देन का पर्याय बन गया है और परस्पर प्रेम और विश्वास का स्थान शक और अहंकार ने ले लिया है। इसी के कारण आज शादियाँ टूटने एवं परिवार बिखरने की घटनायें लगातार बढ़ रही है।

सयुंक्त परिवार की प्रथा अब एकल परिवार में परिणीत हो रही है। हम सभी का मानना है कि वैश्वीकरण, आर्थिक उदारीकरण और सामाजिक-नैतिक मूल्यों में आए बदलाव के कारण शिक्षित वर्ग की सोच बदली है। अपने अधिकारों के प्रति वे जागरूक हुये हैं और अब अपनी गरिमा में अपने स्तर से कम का समझौता नहीं करना चाहते हैं। धैर्य की कमी एवं अहंकार के कारण व बढ़ते हुए सोश्यल मिडिया ने भी आग में घी डालने का कार्य किया है।

आज के लड़के-लड़कियाँ अपने स्वतंत्र अस्तित्व, कैरियर और गरिमा को बनाए रखने के प्रति सजग हैं पर इसका अर्थ यह कतई नहीं है कि वे दोनों साथ रहना भी नहीं चाहते है। वे दाम्पत्य जीवन तो चाहते हैं, लेकिन किसी भी स्तर पर जीवन में सुनना एवं समझौता अथवा एडजेस्टमेंट नहीं करना चाहते है, जिसकी वजह से छोटी -छोटी बातों की तकरार से भी बात विवाह विच्छेद तक पहुंच जाती है, जिसके परिणाम दोनों ही परिवारों के माता-पिता एवं समाज को भुगतना पड़ता है। अगर समय रहते इस तरफ ध्यान नहीं दिया गया तो विवाह विच्छेद के मामले में भारत विश्व का अग्रणी देश बनने के साथ जैन समाज भी विवाह विच्छेद के मामले में अन्य समाजों से अग्रणी बन जाएगा। इस विषय पर आज हम सभी को मिलकर सोचना होगा कि इस की रोकथाम कैसे की जाये जिससे मामले थानों में व पारित न्यायालयों तक नहीं पहुंचे। मेरा मानना है कि इसका समाधान परिवार स्तर पर ही किया जाये तो अच्छा रहेगा जैसा की पहले के जमाने में परिवार एवं समाज के प्रभावी पंचो द्वारा किया जाता था, जिनका निर्णय सर्व प्रभावी होता था। इस कारण परिवार में बिखराव नहीं आता था जिससे परिवार व समाज की शक्ति एवं एकता बनी हुई रहती थी जिसके कारण ही आदर्श परिवार कहलाता था।

आज हमारा शिक्षित समाज है अगर हम अविवाहित बच्चों की काउंसलिंग का कार्य समाज स्तर पर प्रारम्भ कर दें एवं उन्हें शादी करने से पहले ही हम उन्हें शिक्षित व जागरूक करें तो हमारी समस्या का समाधान अवश्य होगा। स्वस्थ एवं आनंदमयी वैवाहिक जीवन कैसे जिया जाये एवं योग्य साथी का चयन करते समय किन-किन बातों पर ध्यान दिया जाये जिससे 'टूटते परिवार - बिखरते रिश्ते' पर जरूर अंकुश लग सकता है। बढ़ते विवाह विच्छेद के मामले कम हो सकते हैं एवं वर्तमान में समाज पर टूटते व बिखरते रिश्ते का दाग लग रहा है वह समाप्त हो सकता है। हम आदर्श परिवार स्थापित करने में अवश्य सफल हो सकते हैं।

***यह विचार मेरे जेएसजीआईएफ के साथी श्री आर.सी. मेहता, उदयपुर ने लिखे हैं जो मुझे बहुत ही प्रेरक लगे और वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बिल्कुल सटीक लेखन है, नव बर्ष के आगमन पर हम सभी सामाजिक बन्धु इस विषय पर गहन चिंतन करें और कोई ठोस विचार समाज के नेतृत्व को प्रेषित कर इस समस्या के निदान हेतु अपने विचारों से अवगत करायें।***

***नव वर्ष आप और आपके परिवार के लिए मंगलमय हो इसी शुभकामनाओं के साथ...***

***-चन्द्रशेखर जैन***

# इच्छा पर अनुशासन

* * * * * * * * * * * * * * * * * * * * * * * * * * * * * *

आचार्य तुलसी तेरापंथ धर्मसंघ के और अणुव्रत के अनुशास्ता हैं। अनुशास्ता को सहज ही अनुशासन–प्रिय होता है। उन्होंने एक ग्रंथ लिखा है– 'मनोनुशासनम्'। इसका अर्थ है मन का अनुशासन। वर्तमान युग का सबसे अधिक लुभावना और आकर्षक शब्द है– मन का अनुशासन। आज मन की समस्याएं जितनी जटिल हैं उतनी संभवतः पहले कभी नहीं थीं। पहले भी मन रहा है, समस्याएं भी रही हैं, किंतु मन की समस्या उतनी जटिल नहीं रही। आज के उद्योगवाद और परिस्थिति ने आदमी को इतना व्यस्त बना दिया कि मानसिक उद्वेग और आवेग प्रबल हो गए। वर्तमान का युग संचार बहुलता का युग है। घटना कहीं भी घटित होती है, आदमी उसे जान लेता है। पुराने जमाने में ऐसा नहीं होता था घर की घटना पड़ोसी से भी अज्ञात रह जाती थी। आज वैसा नहीं होता भारत के किसी भी कोने में घटित होने वाली घटना समूचे विश्व में क्षण भर में फैल जाती है। संचार के साधन इतने विविध और तीव्रगामी हो गए हैं कि बात का फैलाव क्षण भर में हो जाता है। मानसिक समस्याओं का यह भी एक बड़ा कारण है। आज के युग ने मानसिक उलझनों के लिए जैसी उर्वर भूमि तैयार की है, वैसी उर्वर भूमि पहले कभी तैयार नहीं थी। इस स्थिति में 'मन का अनुशासन'–यह शब्द बहुत आकर्षित करता है। यह प्रत्येक व्यक्ति को बांध लेता है।

प्रश्न होता है क्या मन का अनुशासन प्रारम्भ में ही होने वाली घटना है या इसका भी क्रम है? क्या यह खिचड़ी को बीच में से खाने जैसा उपक्रम नहीं है?

शिवाजी हारते गए। जब कभी उन्होंने युद्ध का उपक्रम किया, हार गए। एक बार वे परिवर्तित वेश में बुढ़िया के घर पहुंचे। बुढ़िया ने घर आए अतिथि का मनोयोग से आतिथ्य किया। एक थाली में खिचड़ी परोसी। घी परोसा। खिचड़ी गर्म थी। शिवाजी कुछ दिनों के भूखे थे। गर्म–गर्म खिचड़ी की सुगन्ध ने उनकी भूख को और अधिक तेज कर दिया। खाने की उतावली में शिवाजी ने खिचड़ी के बीच हाथ डाला। हाथ जलने लगा। कवल नहीं ले पाए। बुढ़िया ने देखा। उसने मुस्कराते हुए कहा– बेटा! लगता है तुम भी शिवाजी जैसे मूर्ख हो? यह सुनते ही शिवाजी चौंके! शिवाजी और मूर्ख! यह कैसे मां! उन्होंने पूछा। बुढ़िया बोली–बेटा! देख, शिवाजी ऐसा ही तो कर रहा है। वह शत्रु की राजधानी पर आक्रमण करता है। वहां शत्रु सेना का संचय होता है। शिवाजी का आक्रमण विफल हो जाता है। यदि वह पहले आस–पास के छोटे–छोटे कस्बों को अपने अधीन लेता चले तो उसकी शक्ति संचित होती और फिर वह पूरी शक्ति से राजधानी पर आक्रमण कर विजयी हो सकता है। खिचड़ी को पहले आस–पास से खाते–खाते बीच तक पहुंच जाए तो पूरा काम बन जाता है, अन्यथा नहीं।

शिवाजी को अपूर्व बोध–पाठ मिला एक अनपढ़ किंतु अनुभवी बुढ़िया से।

क्या मन का अनुशासन गर्म–गर्म खिचड़ी को बीच में से खाने जैसा उपक्रम नहीं है? क्या कोई भी व्यक्ति मन को पकड़ सका है? जिसने भी सीधा मन को पकड़ने का प्रयत्न किया है वह या तो मन को पकड़ ही नहीं सका और यदि मन को पकड़ा है तो बीच में ही अटक गया है, उलझ गया है। पहले खिचड़ी को ठण्डी होने की जरूरत है, फिर धीरे–धीरे आस–पास से खाते–खाते बीच तक पहुंचना है।

मेरी दृष्टि में इस ग्रंथ का नाम होना चाहिए था 'इच्छानुशासन'– इच्छाओं का अनुशासन, इच्छाओं पर अनुशासन। पर ग्रंथ का नाम रखा है मनोनुशासनम्, मन का अनुशासन, मन पर अनुशासन। यह एक बहुत बड़ी सचाई है कि सामने वही आता है जो दिखता है जो ढका पड़ा है वह कभी सामने नहीं आता। नींव के आधार पर कोई नामकरण नहीं होता। झण्डों के आधार पर नामकरण होता है। झंडा सबको दिखाई देता है नींव का पत्थर कभी दिखाई नहीं देता। नींव में जो रहा हुआ है, उसे कोई आगे लाना नहीं चाहता। आगे वही लाया जाता है, जो दिखता है।

मन चंचल है, यह हम जानते हैं। वह चंचल क्यों है, यह हम नहीं जानते।

'मनोनुशासनम्' में मन के अनुशासन की एक पूरी प्रक्रिया बतलाई गई है। इस प्रक्रिया के छह अंग हैं–

1. आहार का अनुशासन।
2. शरीर का अनुशासन।
3. इन्द्रिय का अनुशासन।
4. श्वास का अनुशासन।
5. इच्छा का अनुशासन।
6. मन का अनुशासन।

मन का स्थान छठा है। उससे पूर्व इच्छा का स्थान है।

प्राणी का लक्षण है आहार करना। प्राणी का लक्षण है शरीर का होना प्राणी का लक्षण है इन्द्रिय–चेतना का होना। प्राणी का लक्षण है श्वास लेना, बोलना, सोचना, चिन्तन–मनन करना। किन्तु आज इस यांत्रिक युग में ये सब लक्षण डगमगाने लगे हैं। यन्त्रों का इतना विकास हुआ है, हो रहा है कि प्राणी की पूर्व–निर्धारित लक्षण सूची अस्त–व्यस्त हो रही है। कम्प्यूटर के आविष्कार ने सारे मानव मस्तिष्क में हलचल पैदा कर दी है। कम्प्यूटर गणित करता है और कविता भी करता है। वह रोग का निदान करता है तो साथ–साथ औषधियों का प्रेस्क्रिप्सन भी करता है। वह किसी पढ़े–लिखे डॉक्टर से अच्छा निदान करता है और रोग निवारण का सुझाव देता है। सोचना और चिंतन करना– प्राण का यह लक्षण भी डगमगा गया। कम्प्यूटर आदमी से अच्छा सोचता है, अच्छा निर्णय लेता है।

इच्छा प्राणी का अकाट्य लक्षण हो सकता है। कम्प्यूटर और कुछ कर सकता है, इच्छा नहीं कर सकता। इच्छा प्राणी का गहनतम लक्षण है। यह एक ऐसी विभाजक रेखा है जो केवल प्राणी में ही होती है, अप्राणी में नहीं होती। सोचना मस्तिष्क का काम है। कम्प्यूटर भी एक प्रकार का मस्तिष्क ही है। वह मनुष्य के द्वारा बनाया गया है मनुष्य के शरीर में रहने वाला कम्प्यूटर (मस्तिष्क) प्रकृति–प्रदत्त है श्वास भी शरीर में होने वाली प्रक्रिया है। श्वास का केन्द्र शरीर में है इच्छा शरीर के साथ चलने वाला यन्त्र नहीं है। बहुत गहरे में जाने पर उसका पता चलता है। यह भावना–जगत् में होने वाला एक आश्चर्य है यह एक ऐसा दरवाजा है जो सूक्ष्म शरीर से आता है और स्थूल शरीर में खुलता है। इसी ग्रन्थि के आधार पर अकांक्षा और इच्छा पैदा होती है और उस इच्छा के आधार पर सारे कार्य चलते हैं।

मन चंचल होता है इच्छा के द्वारा। इच्छा होती है अन्तर्मन में, गहरे सूक्ष्म जगत् में और मन बेचारा चंचल हो जाता है। वह चक्कर काटने लग जाता है। हम पकड़ना चाहते हैं मन को। वह हाथ में कैसे आएगा?

एक पंखा तेजी से चल रहा था। एक ग्रामीण आया। उसे इतनी तेज हवा अच्छी नहीं लगी। उसने सोचा पंखे को बन्द कर दूं। उसके हाथ में लाठी थी। वह उठा और लाठी को पंखे से अड़ा दिया। लाठी भी लड़खड़ाई और पंखे की ताड़ियां भी लड़खड़ाई। उसने यह सोचकर लाठी नीचे कर दी कि सम्भवतः पंखा रुक गया है पंखा फिर चलने लग गया। फिर तेज हवा आई। वह घबरा गया। उसने पंखे पर लाठी से दो चार प्रहार किए। लाठी भी टूट गई और पंखा भी क्षतिग्रस्त हो गया उसने सोचा– पंखा जिद्दी है। इतना करने पर भी बन्द नहीं होता।

क्या हम भी ऐसा ही नहीं कर रहे हैं? मन का पंखा चल रहा है। हम उसे बन्द करना चाहते हैं, पर स्विच ऑफ करना नहीं चाहते। जिस प्रेरणा से मन का पंखा गतिशील हो रहा है, उस प्रेरणा को रोकना नहीं चाहते। पंखा चलता है बिजली के प्रवाह से। स्विच ऑन करते ही बिजली प्रवाहित होने लग जाती है। उसको रोके बिना पंखा नहीं रुक सकता। ताड़ियां स्वतः नहीं चलतीं। वे चलती हैं पीछे की प्रेरणा से। जब तक वह प्रेरणा रहेगी, पंखा चलता ही रहेगा। हम कह देते हैं – पंखा धूर्त है, चंचल है, बन्द नहीं होता। कैसे होगा बन्द?

हम उस अनपढ़ ग्रामीण की भांति मन के साथ वही व्यवहार करते जा रहे हैं। सीधा मन को रोकने का प्रयत्न करते हैं। लाठी से उसे रोकना चाहते हैं। वह नहीं रुकता। मन का पंखा तब बन्द होगा जब उसको गति देने वाली प्रेरणा को रोक देंगे वह प्रेरणा है– इच्छा। इच्छा का वेग मन को वेग दे रहा है। इच्छा की विद्युत् के आवेश आते हैं, उसकी तरंगें आती हैं और मन बेचारा घूमने लग जाता है। इच्छा दिखाई नहीं देती। वह विद्युत का आवेश दिखाई नहीं देता। ताड़ियां दिखाई देती हैं। आदमी उन्हीं के साथ लड़ने लग जाता है परिणाम कुछ भी नहीं आता। आदमी दस वर्ष, पचास वर्ष या सौ वर्ष भी लड़ता चला जाए, कोई परिणाम नहीं आएगा। वह लड़ाई तब बन्द होती है जब इच्छा को पकड़ लिया जाता है। इच्छा है तो प्रमाद भी होगा, कषाय भी होगा, योग और चंचलता भी होगी। हम चंचलता को नहीं मिटा सकते। हम क्रोध आदि आवेशों को, कषाय और प्रमाद को नहीं मिटा सकते, जब तक हम क्रोध की उत्पत्ति की मूल प्रेरणा को नहीं पकड़ लेते। इसलिए इच्छा पर अनुशासन करना बहुत जरूरी है।

एक छोटा बच्चा बदमाशी कर रहा था। वह किसी के कपड़े, किसी की पुस्तकें और किसी के रूमाल फेंक रहा था। दूसरे ने कहा–बच्चे! ऐसा क्यों कर रहे हो? उसने तपाक से उत्तर दिया–मेरी अपनी इच्छा है। तुम कौन होते हो कहने वाले?

सारी दुनिया में इससे बड़ा कोई उत्तर नहीं हो सकता। आदमी सड़क के बीच बैठ गया। पथिक ने पूछा– बीच में क्यों बैठे हो? उसने कहा–मेरी इच्छा है। कौन है रोकने वाला?

पत्नी ने पति से कहा–आप बीमार हैं। डॉक्टर ने नमक न खाने के लिए कहा है। आप क्यों खाते हैं नमक? पति ने कहा –मुझे क्या खाना है और क्या नहीं खाना है, मेरी अपनी मर्जी है। कौन होता है डाक्टर और कौन होती हो तुम, मुझे मनाही करने वाली।

'मेरी इच्छा'–यह सबसे बड़ा उत्तर है। इसके सामने सब अनुत्तर हैं। परन्तु मनुष्य ने यह अनुभव किया कि इच्छा शाश्वत नहीं है, देशातीत और कालातीत नहीं है। हर स्थान पर, हर बार इच्छा को चलाया नही जा सकता। इस अनुभव के परिणाम स्वरूप इच्छा पर अनुशासन करने की बात प्राप्त हुई। उसने सोचा–जो भी इच्छा जागे, जो भी तरंग उठे, जो भी विकल्प उत्पन्न हो, उसे सर्वत्र लागू नहीं किया जा सकता। उस पर नियन्त्रण होना चाहिए, अनुशासन होना चाहिए इसके आधार पर समाज ने एक सूत्र दिया–इच्छा–परिष्कार। इच्छा का परिष्कार करना चाहिए। इच्छाएं अपरिष्कृत होती है यदि इच्छा के अनुसार आदमी चलता चले तो हमारा यह सभ्य समाज आदिवासियों का समाज बनकर रह जाएगा। व्यक्ति के मन में अनेक प्रकार की इच्छाएं जाग सकती हैं। यदि वह सब इच्छाओं को क्रियान्वित करता है तो समाज में कोई जी नहीं सकता। मन में मारने की इच्छा जागती है और वह किसी को मार डालता है। मन में धन लूटने की इच्छा जागती है, दूसरे के घर पर कब्जा करने की इच्छा जागती है और वह धन लूटता है, दूसरे के घर कब्जा करता है। पूछने पर उसका उत्तर होता है मेरी इच्छा हुई और मैंने वैसा कर डाला। कौन है मुझे रोकने वाला, कहने वाला? इस स्थिति में न्याय की सारी व्यवस्थाएं अस्त–व्यस्त हो जाती हैं। इसलिए समाज ने इच्छा–परिष्कार का सूत्र दिया। इच्छा का परिष्कार या शोधन होना चाहिए। इच्छा वही मान्य हो सकती है जो दूसरों की इच्छा में बाधक न बने, दूसरों को क्षति न पहुंचाए, बाधा न पहुंचाए। इच्छा के परिष्कार के बिना सभ्य समाज का निर्माण नहीं हो सकता।

कभी–कभी परिष्कृत इच्छाएं भी खतरा पैदा कर देती हैं। समाज उनको मान्य कर लेता है, पर वह उन खतरों से बच नहीं सकता। समाज द्वारा यह मान्य है कि पति–पत्नी का संगम हो सकता है। यह व्यक्ति की परिष्कृत इच्छा का नियम है किन्तु आदमी यदि इसको सर्व सामान्य बनाकर इच्छापूर्ति करता चला जाए तो वह वासना के भंवर में गिरकर अनेक रोगों का शिकार हो सकता है। उसकी सारी कार्यजाशक्ति नष्ट हो सकती है।

इस परिस्थिति में उसे इच्छा के परिष्कार से आगे भी कुछ सोचना चाहिए।

पढ़ना है। स्वयं को अध्ययन करना है। दूसरों को कोई आपत्ति नहीं हो सकती। किन्तु कोई व्यक्ति यदि चौबीस घंटा पढ़ता ही चला जाए तो उसकी आंखें खराब हो जाएंगी और मस्तिष्क विकृत हो जाएगा।

इच्छा का भी परिष्कार होना चाहिए परिष्कृत इच्छा के लिए भी संयम और अनुशासन आवश्यक होता है।

आयुर्वेद में एक सिद्धांत के तीन अवयवों की चर्चा है। वे तीन अवयव हैं–योग, अयोग और अतियोग। अयोग हो तो कोई बात पनपती ही नहीं। किसी व्यक्ति को शिक्षा का अयोग हो तो वह नितांत मूर्ख ही बना रहेगा। अतियोग भी हानिकारक होता है कोई व्यक्ति रात दिन पढ़ता ही रहे तो शक्ति–शून्यता आ जाएगी। वह कुछ भी नहीं कर पाएगा न अयोग हो और न अतियोग हो, किन्तु योग होना चाहिए। दिन में 2–4 घण्टे पढ़ा, विश्राम किया, फिर पढ़ा, फिर विश्राम किया। यह है इच्छा पर अनुशासन। योग का अर्थ है– परिष्कृत इच्छा पर नियंत्रण, संयम। अध्यात्म का महत्वपूर्ण सूत्र है–इच्छा पर अनुशासन होना चाहिए। पर प्रश्न उठता है, अनुशासन का उपाय क्या है? क्या कोई जबरन नियंत्रण कर दे? नहीं। अनुशासन स्वयं जागे। मनोनुशासनम् में इसकी पूरी प्रक्रिया बताई गई है।

हमारे शरीर में इच्छा और भावना के सभी केन्द्र हैं। प्रत्येक वृत्ति का केन्द्र हमारे शरीर में है झगड़ालू वृत्ति का केन्द्र है तो क्षमा का भी केंद्र है। वासना का केन्द्र है तो वासना–विजय का भी केन्द्र है। अशांति का केन्द्र है तो परम शांति या निर्वाण का भी केन्द्र है। शरीर इन सब केन्द्र से भरा पड़ा है। केवल प्रक्रिया को जानने की जरूरत है कि कौन–सा बटन दबाने से कौन–सा केन्द्र सक्रिय होता है।

सुदूर अतीत से आदमी के समक्ष एक प्रश्न आता रहा है– 'मैं कौन हूं?' इस महत्वपूर्ण प्रश्न पर अनेक चर्चाएं हुई हैं। कोऽहं, कोऽहं की रट हजारों वर्षों से हजारों साधक लगाते रहे हैं। हजारों साधकों ने अपने अस्तित्व तक पहुंचकर इस प्रश्न को समाहित किया है। महर्षि रमण ने इस प्रश्न को बहुत उभारा। वे रटते रहे– मैं कौन हूं? मैं कौन हूं? उनकी पुस्तक है हू एम आई? (Who am I?) मैं कौन हूं?

आज मैं इसकी व्याख्या भिन्न प्रकार से करना चाहता हूं। हमें यह जानने की कोई आवश्यकता नहीं है कि मैं कौन हूं? मैं आत्मा हूं। मैं परमात्मा हूँ, हम इस बात को भूल जाएं। मैं कौन हूं–इसे हम शरीर के संदर्भ में समझे। क्या मैं इच्छा–पुरुष हूं? क्या मैं प्राण–पुरुष हूं? क्या मैं प्रज्ञापुरुष हूँ? इसका उत्तर हमें मिल सकता है। कहीं अन्यत्र जाने की जरूरत नहीं, किसी ग्रंथ को पढ़ने की जरूरत नहीं। कुछ भी करने की जरूरत नहीं। हम यह जान लें कि शरीर में मैं कहां हूं, इसका उत्तर मिला तो 'मैं कौन हूं'– इसका उत्तर अपने आप ही मिल जाएगा।

शरीर के तीन भाग हैं–1. हृदय से ऊपर का भाग, 2. नाभि के पास का भाग और 3. नाभि से नीचे का भाग।

साधक को सोचना चाहिए कि शरीर के इन तीनों भागों में मेरी चेतना, मेरा अन्तर्मन कहां रहता है? चेतना नाभि के ऊपर वाले भाग में अधिक रहती है या नाभि के नीचे वाले भाग में। जहां चित्त या चेतना अधिक रहेगी वहां के चक्र या चेतना–केन्द्र अधिक सक्रिय होंगे। नाभि के नीचे चित सक्रिय रहेगा तो वहां के केन्द्र अधिक सक्रिय होंगे। हृदय के ऊपर वाले भाग में चित्त अधिक विहरण करेगा तो वहां के चक्र अधिक सक्रिय होंगे। जहां चेतना कम हो जाएगी, वहां निष्क्रियता व्याप जाएगी। जहां चेतना का पोषण मिलेगा, वहां जागृति होगी। जहां पोषण नहीं मिलेगा, वहां सुषुप्ति होगी। हमको केवल यही निर्णय करना है कि मैं कहा है? मैं शरीर के इन तीन भागों में से किस भाग में अधिक रमण करता हूं? इस बात का निर्णण होते ही 'मैं कौन हूँ' का उत्तर मिल जाएगा। यदि चित्त नाभि के आस–पास घूमता है तो मान लो कि तुम इच्छा–पुरुष हो। इच्छा जागृति का केन्द्र है सारी इच्छाएं यहां जागती हैं। यह अविरति का केन्द्र है यह चतुर्थ गुणस्थान का केन्द्र है। यहां चतुर्थ गुणस्थान उद्घाटित होता है, प्रकट होता है। यहां इच्छाएं पैदा होती हैं। बार–बार यहां आकर चित्त अटक जाता है। चित्त के कारण यहां का केन्द्र सक्रिय हो जाता है। एक इच्छा के बाद दूसरी इच्छा जागती रहती है। इच्छाओं का प्रवाह–सा उमड़ आता है, अविरति की बाढ़ आ जाती है। एक के बाद दूसरी अविरति की तरंग उठती रहती है। यहां निर्णय हो जाता है कि 'मैं इच्छा–पुरुष हूं।' यहां इच्छा प्रधान होती है। इच्छाएं और इच्छाएं। और कुछ नहीं। उन पर हमारा अनुशासन नहीं।

यदि चेतना हृदय पर, कंठ पर, नासाग्र पर, भृकुटि पर ललाट के मध्य भाग में और सिर के ऊपर विहरण करने लगती है, वहां टिकती है तो निर्णय हो जाता है कि 'मैं प्राण–पुरुष हूं'– मैं प्रज्ञा–पुरुष हूँ। जब चेतना नाभि के ऊपर नासाग्र तक विहरण करती है तो प्राण–पुरुष प्रकट होता है। और जब चेतना भृकुटि से ऊपर जागती है तब प्रज्ञा–पुरुष प्रकट होता है।

चेतना के विहरण क्षेत्र के आधार पर निर्णय होगा कि मैं इच्छा पुरुष हूं या प्राण–पुरुष हूं या प्रज्ञा–पुरुष हूं। 'कहां है' के द्वारा 'कौन हूं' का निर्माण होगा।

जब चेतना ऊपर सक्रिय होगी तो ऊपर के केन्द्र जाग जाएंगे और नीचे के केन्द्र सो जाएंगे। जब चेतना नीचे सक्रिय होगी तो नीचे के केन्द्र जाग जाएंगे और ऊपर के केन्द्र सो जाएंगे। जब चेतना ऊपर सक्रिय होगी तो इच्छा–केन्द्र पर अपने आप अनुशासन स्थापित हो जाएगा। सबसे बड़ी बात है–नियंत्रण के केन्द्रों का बोध होना।

एक महिला मोटर गाड़ी को तेजी से चला कर ले जा रही थी। सामने से पुलिस की गाड़ी आई। पुलिस ने कहा– इतनी तेज रफ्तार से मोटर चलाना अपराध है। महिला बोली–मैं जानती हूं। परन्तु क्या करूं, मोटर का नियंत्रण–केन्द्र मेरे वश में नहीं रहा। मेरे हाथ से छूट गया। इतना ही नहीं, मैं भूल ही गई हूं कि नियंत्रण केन्द्र है कहां? वह उसी रफ्तार से आगे बढ़ी। पेड़ से टकराई मोटर समाप्त और साथ–साथ चालिका भी समाप्त।

जब नियंत्रण केन्द्र हाथ से निकल जाता है तब समाप्त होने में किसी को देर नहीं लगती। जीवन की गाडी तब तक ही सुरक्षित चल सकती है जब तक ब्रेक या नियंत्रण–केन्द्र हाथ में रहता है। जब नियंत्रण केन्द्रों से हाथ हट जाता है तो पग–पग पर खतरा ही खतरा नजर आने लगता है।

शरीर में अनगिनत नियन्त्रण–केन्द्र हैं। मस्तिष्क सबका नियामक है। नाड़ी–संस्थान, रीढ़ की हड्डी, सुषुम्ना आदि भी नियंत्रण केन्द्र हैं। जिस व्यक्ति सुषुम्ना में चित्त की यात्रा करना समझ लिया, मस्तिष्क में यात्रा करना जान लिया या शरीर के आगे–पीछे, दाएं–बाएं और ऊपर में यात्रा करना समझ लिया, उसने बहुत रहस्य समझ लिए। एक नियन्त्रण–केन्द्र शरीर के ऊपर के भाग में है, एक पीछे के भाग में है, दाएं बाएं है मध्य में है। हम इन पांच स्थानों पर शरीर को पारदर्शी बना सकते हैं। हमारा पूरा शरीर चुम्बकीय क्षेत्र है वह इन पांच भागों में अधिक चुम्बकीय बन सकता है। जब वह पूरा चुम्बकीय बन जाता है तब अतीन्द्रिय चेतना पैदा होती है अवधिज्ञान पैदा होता है। अवधिज्ञान के पांच प्रकार बनते हैं आगे के भाग का अवधिज्ञान, पीछे के भाग का अवधिज्ञान, दाएं भाग का अवधिज्ञान, बाएं भाग का अवधिज्ञान, सिर पर का अर्थात् मध्य भाग का अवधिज्ञान। शरीर तथा शरीर के नियन्त्रण–केन्दों को समझे बिना, इसको कभी चुम्बकीय क्षेत्र बनाया जा सकता। इसकी विद्यत् का उपयोग नहीं किया जा सकता।

इच्छाओं पर अनुशासन करने के लिए जरूरी है नियन्त्रण–केन्द्रों को समझना। इच्छा भीतर से आती है। प्राणशक्ति के साथ काम करती है। यदि प्राणशक्ति का सहारा न मिले तो इच्छा भीतर उत्पन्न होगी पर बाहर में आकर निष्क्रिय बन जाएगी। भीतर से कोई भी आता है और यदि उसे कोई सहयोग नहीं मिलता है तो वह निकम्मा बन जाता है। बड़े से बडे व्यक्ति को भी यदि स्थानीय जनता का सहयोग प्राप्त नहीं होता है तो वह आदमी निकम्मा बन जाता है, वह कुछ भी नहीं कर सकता। प्राणशक्ति का सहयोग अपेक्षित होता है।

एक लेखक ने संपादक को लिखा कि आपके पत्र में कहानियां छपती हैं, उनके न सिर होता है, न पैर होता है

कितनी अजीब कहानियां छपती हैं! मैं आपको अपनी कहानी भेज रहा हूं। उसके सिर भी हैं, पैर भी हैं। सम्पादक ने पत्रोत्तर देते हुए लिखा–कहानी अच्छी है। उसके सिर भी हैं और पैर भी हैं, पर उसमें प्राण नहीं है, इसलिए वापस लौटा रहा हूँ।

सिर से भी काम नहीं चलता, पैर से भी काम नहीं चलता, यदि प्राण न हो तो। प्राण हो तो सिर भी काम का होता है और पैर भी काम के होते हैं। मुर्दे का सिर भी काम का नहीं होता और पैर भी काम के नहीं होते। प्राण के साथ ही वे काम के होते हैं। जब प्राण की शक्ति मिलती है, तब इच्छा अपना काम करने लग जाती है। हम प्राण–शक्ति को ऐसे नियंत्रण केन्द्रों में संयोजित करें जिनसे हमारे ऊपरी भाग के केन्द्र जागृत हों और इच्छा पैदा करने वाला केन्द्र सो जाए, निष्क्रिय बन जाए ऐसा होने पर इच्छा आएगी, विलीन हो जाएगी। फिर आएगी फिर विलीन हो जाएगी। यह एक प्रक्रिया है इच्छा पर अनुशासन करने की। मनोनुशासनम् में इस प्रक्रिया को विस्तार से समझाया गया है। हम उसे पढ़ें। बहुत पढ़ना भी जरूरी नहीं है और न पढ़ना भी अच्छा नहीं है। किन्तु सबसे पहले अपने आपको जान सकें, उसे जरूर पढ़े। जो अपने आपको भी नहीं जान पाते तो फिर पढ़ने का अर्थ क्या होगा? प्रश्न हो सकता है– मनोनुशासनम् पढ़ने की जरूरत क्या है? हम आचार्य तुलसी को जानते हैं। उन पर विश्वास है हमारा। कभी–कभी हमारा भ्रम भी हो जाता है। हम जो जानने की बात करते हैं, शायद नहीं जान पाते। किसी माध्यम से व्यक्ति को ज्यादा जान पाते हैं।

जब तक चेतना बहिर्मुखी रहेगी, हम किसी को भी नहीं जान पाएंगे नहीं पहचान पाएंगे। न हम अपने आपको पहचान पाएंगे और न दूसरों को पहचान पाएंगे।

जब चेतना अन्तर्मुखी बनती है तब सबसे पहले अपने आपको जानने की बात प्राप्त होती है जब हम अपने आपको जानते हैं, तब दूसरों को जानने में सुविधा हो जाती है। हमारी समस्याएं हल हो जाती हैं। स्वयं को जाने बिना हमारे मूल्यांकन की दृष्टियां यथार्थ नहीं होती। हम जितने भी क्राइटेरिया बनायेंगे, वे सारे अर्थ शून्य होंगे। जब हम स्वयं को जान लेंगे हैं, तब दूसरों को पहचानने में हमें कोई कठिनाई नहीं होगी तब हमारे सारे दृष्टिकोण यथार्थ होंगे, पहचान यथार्थ होगी।

अपने आपको जानने के लिए अन्तर्मुखी होना आवश्यक है। अन्तर्मुखी बनने के लिए मन पर अनुशासन करना जरूरी है और मन पर अनुशासन तब फलित होता है जब इच्छा पर अनुशासन साध लिया जाता है। इसलिए अनुशासन का क्रम होगा–इच्छा पर अनुशासन मन पर अनुशासन इसका फलित होगा–अन्तर्मुखता।

इच्छा पर अनुशासन होने पर आहार पर अनुशासन स्वतः प्राप्त हो जाता है। जैसे–जैसे इच्छा कम होती जाएगी आहार पर नियन्त्रण होता जाएगा। आदमी ज्यादा क्यों खाता है? इच्छा ही उसका मुख्य कारण है। आवश्यकतावश कोई अधिक नहीं खाता। प्रत्येक व्यक्ति यह अनुभव करे कि यह आवश्यकतावश कितना खाता है और इच्छावश कितना खाता है? आश्चर्य होगा यह जानकर कि मात्र आवश्यकतावश या उपयोगितावश खाने वाला, सौ में एक व्यक्ति भी मिल पाना कठिन है इच्छा के कारण खाने वाले शत–प्रतिशत है। शरीर की मांग उतनी नहीं है, जितना आदमी खाता है।

बदलाई मौसम होती है। आकाश बादलों से आच्छन्न होता है। शीतल समीर बहता है। आदमी के मन में गर्म हलवा खाने की इच्छा पैदा हो जाती है और वह भर–पेट हलवा खाता है। मौसम ने इच्छा पैदा कर दी। उपयोगिता का प्रश्न गौण हो गया। आवश्यकता का कोई प्रयोजन ही नहीं रहा। अभी–अभी भोजन से निवृत्त हुए। बाजार में गए। कोई चीज सामने आई। खाने के लिए मन ललचाया। खा ली। और जब तक बाजार में रहे, दो–चार बार और खा–पी लिया। क्या वह आवश्यकतावश खा रहा है या इच्छावश खा रहा है? खाने की आवश्यकता बहुत कम होती है। यदि आदमी आवश्यकतावश ही खाए तो आने वाली अनेक समस्याएं समाहित हो जाती हैं। आवश्यकता की पूर्ति के लिए खाने से आदमी दीर्घायु होता है, रोगों से बचता है और आनन्द से जीता है।

अनुशासन का एक क्रम है–

* इच्छा पर अनुशासन। * श्वास पर अनुशासन।
* आहार पर अनुशासन। * भाषा पर अनुशासन।
* शरीर पर अनुशासन। * इन्द्रियों पर अनुशासन।
* मन पर अनुशासन।

अब इसी क्रम से 'मनोनुशासनम्' की व्याख्या प्रस्तुत है। पहले हम मन पर अनुशासन करने की बात न सोचें। पहले बीज से चलें। बीज है–इच्छा। फिर हम बेल पर, पत्तों और फूलों पर ध्यान दें। फिर अन्त में फल पर ध्यान दें। इसी क्रम से साधना चले और हमारा बोध पाठ भी चले। इस प्रकार चलने से मन पर अनुशासन करना कोई कठिन कार्य नहीं रहेगा।

***–आचार्य महाप्रज्ञ***

*('मैं कुछ होना चाहता हूँ' से साभार)*

# भावभीनी श्रद्धांजलि

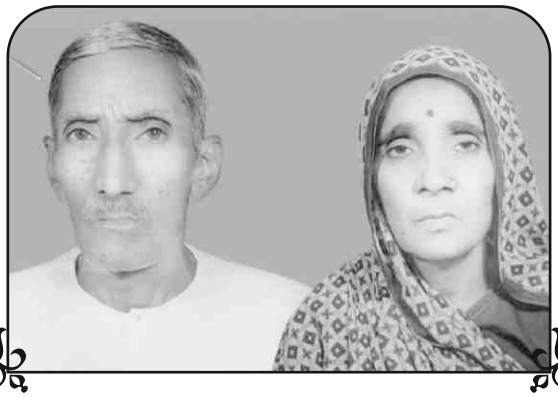

पूजनीय पिताजी स्व. श्री प्यारेलाल जी जैन चौधरी
श्रद्धेय माताजी स्व. श्रीमती असरफी देवी जी जैन
*(मूल निवासी - मौजपुर, अलवर)*

स्व. श्रीमती इन्दु जी जैन
*(धर्मपत्नी श्री पदम चन्द जैन)*
**(स्वर्गवास : 30.12.2018)**

***हम सभी परिवार के सदस्य सादर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुये भगवान वीर से उनकी चिर आत्मीय शांति की प्रार्थना करते हैं।***

## श्रद्धावनत

***पुत्र :***
पदम चन्द जैन
***पौत्र-पौत्रवधु :***
पारस जैन-रश्मि जैन,
***पौत्री-दामाद :***
डिम्पल-राजेश जैन
सिम्पल-नितिन जैन
प्रिती-उत्तम कोठारी
***पड़पोत्री-पौत्र :***
चेल्सी जैन-अक्षत जैन

***पुत्र :***
अनूप चन्द जैन
***पौत्र-पौत्रवधु :***
हेमन्त जैन-मधु जैन
***पौत्री-दामाद :***
सुनिता-सुनिल
अनिता-परवेश
विनिता-प्रताप
***पड़पौत्र :***
रोबीन-मानस

***निवासः-*** बी-52, कीर्ति नगर, टोंक रोड, जयपुर
फोन : 0141-2706317, 9829066317, 9414055855

# हार्दिक बधाई

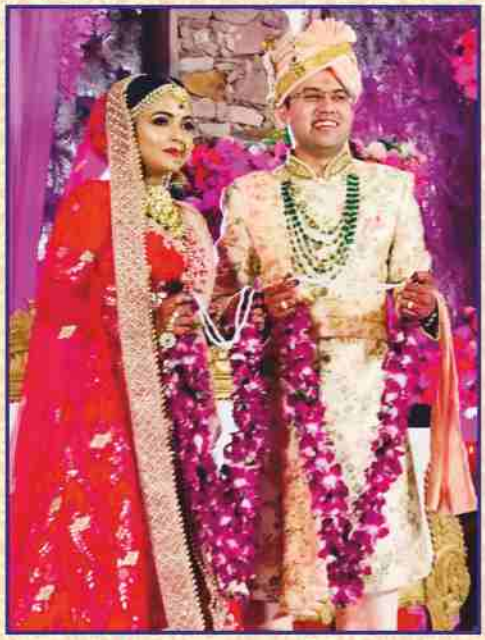

## सौ.कां. चारमी जैन

*( सुपुत्री श्रीमती मंजु जैन एवं श्री मुकेश कुमार जैन, अलवर )*

**संग**

## चि. रोनक जैन

*( सुपुत्र श्रीमती रेनु जैन एवं श्री रविकान्त जैन, जयपुर )*

*के शुभ विवाह पर*

*हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाऐं*

**शुभेच्छु**

*दादा-दादी :*
शिवचरण लाल जैन-गीता देवी जैन
*ताऊजी-ताईजी :*
स्व. श्री सुभाष जैन-माया जैन
स्व. श्री विनोद जैन-विमला जैन
*चाचा-चाची :*
राकेश जैन-नीलम जैन
राजेश जैन-प्रियंका जैन
*बुआजी-फुफाजी :*
ममता जैन-हेम कुमार जी जैन
डिम्पल जैन-पवन जी जैन

*भाई-भाभी :*
सौरभ जैन-ऋतु जैन
*भतीजी :*
नायशा जैन (आरू)

*नानाजी-नानीजी :*
स्व. श्री सुमतचन्द जैन दीवान-अंगुरी देवी जैन
*मामा-मामी :*
स्व. श्री विजय कुमार जैन
राजकुमार जैन-हिमांशी जैन
मनोज जैन-सरोज जैन
संजय जैन-विनीता जैन
सुनील जैन-गरिमा जैन
*मौसीजी-मौसाजी :*
रजनी जैन-संजय जैन

**मुकेश कुमार जैन**

*अध्यक्ष, श्री चन्द्रप्रभू दिगम्बर जैन पंचायती मन्दिर, मुंशी बाजार, अलवर*

# भावभीनी श्रद्धांजलि

स्व. श्री जैनी लाल जी जैन
*(स्वर्गवास : 11 जनवरी 2014)*

स्व. श्रीमती शान्ति देवी जैन
*(स्वर्गवास : 29 दिसम्बर 1993)*

## श्रद्धावनत

विमल चंद जैन *( दामाद ) आबू रोड*
कुसुम-हरीश जी *( पुत्री-दामाद ) अलवर*
सुमन-अशोक जी *( पुत्री-दामाद ) आगरा*

राजेन्द्र-शशी जैन *( पुत्र-पुत्रवधु )*
विनोद-शकुन्तला जैन *( पुत्र-पुत्रवधु )*
निशा जैन *( पुत्रवधु )*

आशीष-महक जैन ( U.S.A. ) *( पौत्र-पौत्रवधु )*
गौरव-निशू जैन *( पौत्र-पौत्रवधु )*
पुनीत-सुरूची जैन *( पौत्र-पौत्रवधु )*
आरव *( पड़पौत्र )* व प्रणवी *( पड़पौत्री )*

5405, लड्डू घाटी, पहाड़गंज, नई दिल्ली-110055
मोबाईल : 9971845125

BC-10D, DDA Flats, मुनीरका, नई दिल्ली-110023
दूरभाष : 9711159909, 9711132189, 26164755

के-84, शान्ति कुंज, बाल उद्यान मार्ग, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059
मोबाईल : 9810822840, 9810822844/43

मो.: 9891909666, 9717817342
Email : vinodshakun@gmail.com

# अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

हमारे पूज्यनीय

## स्व. श्री कुशलचन्द जी जैन

*( रामगढ़, अलवर वाले )*

*के दिनांक 24.11.2020 को आकस्मिक देवलोक गमन पर विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए वीरप्रभु से प्रार्थना करते हैं कि उन्हें अपने चरणों में स्थान प्रदान करें। आपका सरल व सादगीपूर्ण जीवन हमारे लिये प्रेरणा स्रोत रहेगा।*

**श्रद्धावनत**

श्रीमती रेखा जैन *( पत्नी )*

*पुत्र-पुत्रवधु :*
शशांक-भारती जैन, *वडोदरा*

*नाती :*
मा. अधृत जैन

*बहन-बहनोई :*
राजुल-ज्ञानचन्द जैन, *जयपुर*

*भतीजा-भतीजावधु :*
संजीव-अर्चना जैन, *अहमदाबाद*

*भतीजी :*
श्रीमती नीरू जैन, *हरिद्वार*
श्रीमती रेनू जैन, *देहरादून*

*भतीजी-भतीज दामाद :*
रेखा-विनोद जैन, *मेहसाणा*

*भांजा-भांजा वधु :*
अनिल-सीता जैन, *जयपुर*

*एवं समस्त आमेश्वरी परिवार*

*साला-सलज :*
राकेश-सरला जैन, *जोधपुर*
मनोज-कविता जैन, *कोटा*

*साढ़ू-साली :*
हीरालाल-सुमन जैन, *जयपुर*
योगेश-सुनीता जैन, *हाथरस*
रविन्द्र-नीरू जैन, *जोधपुर*
श्रीमती अनीता जैन, *जोधपुर*

*निवास :*
ए-68, स्कीम नं. 6, कुम्भा नगर, चित्तौड़गढ़-312001 ( राज. )
31, शिवम रेजीडेन्सी, कोयली, वडोदरा-391330 ( गुजरात )
मो.: 9729734451, 6377620989

# भावभीनी श्रद्धांजलि

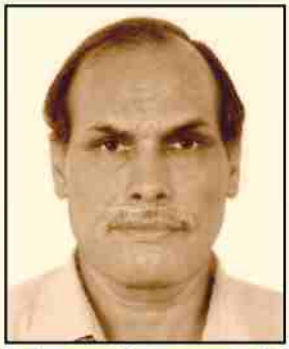

**स्व. श्री महावीर प्रसाद जी जैन**

*(सुपुत्र स्व. श्री हरीशचन्द्र जी जैन)*

*(पुण्यतिथि : 21.5.2017)*

**स्व. ई. श्री मोहित कुमार जी जैन**

*(सुपुत्र स्व. श्री महावीर प्रसाद जी जैन)*

*(पुण्यतिथि : 9.8.2018)*

*हम आपको सादर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए*
*भगवान वीर से आपकी चिर आत्मीय शांति की प्रार्थना करते हैं।*

## श्रद्धावनत

श्रीमती मिथलेश जैन
*( धर्मपत्नी )*
डॉ. मेघा जैन-डॉ. पीयूष जैन
*( पुत्री-दामाद )*

श्रीमती मिथलेश जैन
*( माँ )*
डॉ. मेघा जैन-डॉ. पीयूष जैन
*( बहन-बहनोई )*

**मोहित कुमार जैन ट्रस्ट (पंजि.)**

ए/165, पालम एक्सटेंशन, सेक्टर 7, द्वारका, नई दिल्ली-110077
दूरभाष : 9599660709, 9599230509

# कोरोना और सामाजिक चिंतन

आज सम्पूर्ण विश्व कोरोना महामारी की चपेट में है। चारों ओर एक अजीब तरह का भय और संदेह का वातावरण निर्मित हो गया है। चीन के वुहान शहर से शुरू हुई इस असाध्य वायरस की यात्रा विश्व के कोने–कोने तक पहुंच गई है और अभी अनवरत जारी है। बिना किसी पक्षपात और भेदभाव के, ना क्षेत्रवाद, न जातिवाद, न भाषावाद व न ऊंच–नीच का भेद, न गरीब व अमीर का भेद। इस अदृश्य वायरस ने निर्बाध और निर्विघ्न अपनी यात्रा के माध्यम से सम्पूर्ण दुनिया को अपने रौद्र रूप से भयभीत कर रखा है। लाखो जिंदगियों को चिरनिद्रा में सुला दिया है।

30 जनवरी को भारत में पहला कोरोना रोगी मिला और 22 मार्च को भारत के प्रधानमंत्री जी ने अविलम्ब निर्णय लेते हुए जनता कर्फ्यू की घोषणा की व अपने प्रथम राष्ट्र के नाम सम्बोधन में रोग की भयावहता का वर्णन कर दिया था अनन्तर 24 मार्च को त्वरित निर्णय लेते हुए 21 दिन के लॉकडाउन की घोषणा व मास्क व सामाजिक दूरी का उल्लेख किया। तदनन्तर विभिन्न प्रकार की छूट के अनुसार लॉकडाउन में शिथिलता मिलती रही।

आज जब इस महामारी को 9 माह हो गए है किसी ने कल्पना नहीं की थी कि देश ठहर जाएगा, सामाजिक जीवन थम जाएगा। परिणामस्वरूप सामाजिक कार्य, शादी समारोह व अन्य मांगलिक कार्य, बाजार, मेले, त्यौहार व अनौपचारिक मेल–मिलाप सबका स्वरुप बदल दिया।

एक अदृश्य निर्जीव वायरस ने सब कुछ बदल दिया। विश्व की शक्ति कहे जाने वाले देश शीर्ष आसन पर है। अपनी सैन्य, आर्थिक, सामरिक व परमाणु शक्ति पर गर्व करते थे आज उनमें से उनके लिए कोई भी अस्त्र–शस्त्र काम नहीं आ रहा है उस वायरस से मुकाबला करने में।

उल्लेखनीय है कि माननीय प्रधानमंत्री जी ने सामाजिक दूरी रखने की अपील की और हम सबने इसकी अक्षरशः पालना भी की और पालना ऐसी की हमने अपनों को अपने से दूर कर दिया। वैसे तो हम सब इस महामारी से पूर्व ही दूरी बना चुके थे अपने–अपने स्वार्थ व सुविधानुसार लेकिन ईश्वर ने भी हम सबकी भावना और नियत के अनुसार इस तरह का खेल रचा की मन की दूरी यथार्थ रूप देकर एक फ्रेम में डाल दिया उस फ्रेम का नाम है 'कोरोना'।

सामाजिक दूरी जिसे आंग्ल भाषा में social distancing कहते हैं इसका अभिप्राय है फिजिकल डिस्टेंस अर्थात शारीरिक दूरी लेकिन इसके चलते लोगों ने इसका नकारात्मक अभिप्राय समझ कर एक दूसरे से दूरी बना ली व एक दूसरे को शक सन्देह की दृष्टि से देखने लगे। सामाजिक दूरी होनी चाहिए इस महामारी को प्रसार से रोकने की पहली शर्त है। लेकिन घृणा का भाव नहीं होना चाहिए कतिपय समय से ये अनुभव में आया की सामाजिक दूरी घृणा और सन्देह में परिवर्तित हो गयी जिसकी वजह से हमारे सम्बन्धों को खूबसूरत विरासत व थाती खतरे के चक्रव्यूह में फंस गयी जिसकी वजह से परिवारों में अवसाद, एकाकीपन और असुरक्षा का भाव तेजी से पनप रहा है। मानव को मानव शक से देख रहा है।

इस बीमारी की बुनियाद हमारे व्यवहार व वाग्विलास की सोच ने पहले ही रख दी थी उसका प्रमाण हमारे चारों ओर का वातवरण जिसकी हम चर्चा भी करते हैं देखते भी हैं और हम में से बहुत लोग उस अनचाहे जीवन को जी भी रहे है। आज हमें सोचना होगा कि हमारा सामाजिक चिंतन उर्ध्वगामी, ऊर्जावान व समाज परिपेक्ष्य होना चाहिए। मेलमिलाप, मन में दया, करुणा, सहानुभूति व एक दूसरे के काम आने की क्षमता का विकास करना होगा। इस अमूल्य मानव जीवन के महत्त्व को समझकर अपने कार्यकलाप हों। हम अपनी क्षमता का 100 फीसदी परिवार, समाज व राष्ट्र के कल्याण चिंतन में लगाए जिससे मानवता का भला हो। कोरोना काल की चुनौतियों को आत्मसात करते हुए व हेल्थ प्रोटोकॉल की पालना करते सकारात्मक सामाजिक चिंतन करें।

सामाजिक चिंतन की बुनियाद सकारत्मकता व रचनात्मक जीवन पर आधारित हो। जीवन को ईश्वर से

मिला हुआ अवसर मानकर अधिक से अधिक शारीरिक ऊर्जा का दोहन समाज हित में हो। निरापद और नीरोग जीवन के लिए सात्विक ज्ञान, सात्विक चिंतन, सात्विक कर्म और संयमित जीवन चर्या की आवश्यकता है।

उल्लेखनीय है कि ये देखने में आया है कि महानगरों में इस महामारी का प्रसार तेजी से हुआ, तुलनात्मक गांवों के। निःसन्देह ये सत्य है– गांव का जीवन शहर के जीवन से कठोर, मेहनती, बिना किसी दिखावे का है व पंचमहाभूत पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश के निकटम सम्पर्क में रहता है।

॥ शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्॥

जिसकी वजह से उनकी रोग प्रतिरोध क्षमता शहरी जीवन जीने वालों से बेहतर होती है। पंच तत्वों से प्रत्यक्ष सम्पर्क होना चाहिए हमारा जिससे हमारा आत्मबल, शारीरिक बल और मानसिक बल को पौषण मिले। प्रकृति में प्रत्येक रोग का भेषज मौजूद है और वो शरीर की प्रकृति के अनुकूल भी है।

निहितार्थ इतना ही है कि समाजिक चिन्तन विशुद्ध रचनात्मक, सृजनात्मक व आनन्दमय हो। अन्योन्याश्रित का भाव चिंतन में समाहित न रहे।

*सर्वे भवन्तु सुखिनः,*
*सर्वे सन्तु निरामयाः।*
*सर्वे भद्राणि पश्यन्तु,*
*मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत्॥*
*शान्तिः शान्तिः शान्तिः*

सभी सुखी रहे सभी नीरोगी रहे, व सभी का कल्याण हो। जीवन दुखो से दूर रहे।

***–पवन कुमार जैन (परवैनी)***
*जयपुर*

# पिता पुत्री के संबंध

बेटी की विदाई के वक्त बाप ही सबसे आखिरी में रोता है क्यों, चलिए आज आपको विस्तार से बताता हूं।

बाकी सब भावुकता में रोते हैं, पर बाप उस बेटी के बचपन से विदाई तक के बीते हुए पलों को याद कर–कर के रोता है।

माँ बेटी के रिश्तों पर तो बात होती ही है, पर बाप और बेटी का रिश्ता भी समुद्र से गहरा है। हर बाप घर के बेटे को गाली देता है, धमकाता है, मारता है, पर वही बाप अपनी बेटी की हर गलती को नकली दादागिरी दिखाते हुए नजर अंदाज कर देता है। बेटे ने कुछ मांगा तो एक बार डांट देता है पर बेटी ने धीरे से भी कुछ मांगा तो बाप को सुनाई दे जाता है, और जेब में हो न हो पर बेटी की इच्छा पूरी कर देता है। दुनिया उस बाप का सब कुछ लूट ले, तो भी वो हार नहीं मानता पर अपनी बेटी के आंख के आंसू देख कर खुद अंदर से बिखर जाए उसे बाप कहते हैं। और बेटी भी जब घर में रहती है तो उसे हर बात में बाप का घमंड होता है, किसी ने कुछ कहा नहीं कि वो बेटी तपाक से बोलती है, पापा को आने दे फिर बताती हूं। बेटी घर में रहती तो माँ के आंचल में है, पर बेटी की हिम्मत उसका बाप रहता है।

बेटी की जब शादी में विदाई होती है तब वो सबसे मिलकर रोती तो है पर जैसे ही विदाई के वक्त कुर्सी समेटते बाप को देखती है, जाकर झूम जाती है और लिपट जाती है और ऐसा कस के पकड़ती है अपने बाप को जैसे माँ अपने बेटे को, क्योंकि उस बच्ची को पता है ये बाप ही है जिसके दम पर मैंने अपनी हर जिद पूरी की थी। खैर बाप खुद रोता भी है और बेटी की पीठ ठोक कर फिर हिम्मत देता है, कि बेटा चार दिन बाद आ जाऊँगा तुझको लेने और खुद जान बूझकर निकल जाता है किसी कोने में और उस कोने में जाकर वो बाप कितना फूट–फूट कर रोता है, ये बात सिर्फ एक बेटी का बाप ही समझ सकता है।

जब तक बाप जिंदा रहता है, बेटी मायके में हक़ से आती है और घर में भी जिद कर लेती है और कोई कुछ कहे तो डट के बोल देती है कि मेरे बाप का घर है, पर जैसे ही बाप मरता है और बेटी आती है तो वो इतनी चीत्कार करके रोती है कि, सारे रिश्तेदार समझ जाते हैं कि बेटी आ गई है। और वो बेटी उस दिन अपनी हिम्मत हार जाती है, क्योंकि उस दिन उसका बाप ही नहीं उसकी वो हिम्मत भी मर जाती हैं। बाप की मौत के बाद बेटी कभी अपने भाई के घर जिद नहीं करती है, जो मिला खा लिया, जो दिया पहन लिया क्योंकि जब तक उसका बाप था तब तक सब कुछ उसका था यह बात वो अच्छी तरह से जानती है।

आगे लिखने की हिम्मत नहीं है, बस इतना ही कहना चाहता हूं कि बाप के लिए बेटी उसकी जिंदगी होती है, पर वो कभी बोलता नहीं, और बेटी के लिए बाप दुनिया की सबसे बड़ी हिम्मत और घमंड होता है, पर बेटी भी यह बात कभी किसी को बोलती नहीं है। बाप बेटी का प्रेम समुद्र से भी गहरा होता है।

***संकलन : मुकेश चन्द जैन***
*के.का. सदस्य, अ.भा.प. जैन महासभा*

# पल्लीवाल जैन समाज : एक परिचय

वर्तमान में जैन समाज में पाई जाने वाली अधिकांश जातियों की उत्पत्ति इतिहासकारों द्वारा विभिन्न नगरों से बताई जाती है। यद्यपि जैन परम्परा जाति व्यवस्था को ऋषभदेव के काल तक ले जाती है। तथापि इतिहासकार जातियों के नामों को नगरों के नामों से जोड़ते हैं। पल्लीवाल समाज के प्रादुर्भाव **अथवा उत्पत्ति के बारे में भी कई विचाराधाराऐं मिलती हैं। एक तर्कसंगत विचार के अनुसार पल्लीवाल जाति का** उद्भव ईसा पूर्व पहली, दूसरी शताब्दी के आसपास दक्षिण भारत में हुआ था।

दक्षिण की तेलुगु तथा तमिल भाषी के **पल्ली** शब्द का अर्थ छोटे गांव से होता है। वहां आज भी छोटे–छोटे गांवों के नाम के पीछे पल्ली शब्द लगाने का प्रचलन है। प्राचीन काल में एक पल्ली (छोटे गांव) में एक ही वर्ण के लोग रहते थे। कई–कई पल्लियों के लोग एक ही वर्ण के तथा एक ही धर्म को मानने वाले हुआ करते थे। अतः उन सभी पल्लियों के सब लोग जो जैन धर्मानुयायी हैं तथा उनका वर्ण वैश्य था, कालान्तर में पल्लीवाल कहे जाने लगे तथा ये समूह ही बाद में पल्लीवाल जाति के नाम से प्रसिद्ध हो गया। कतिपय अन्य लोग जातियों को अनादिनिधन एवं शाश्वत मानते हैं।

आचार्य कुन्द–कुन्द पल्लीवाल जात्युत्पन्न थे। उनका जन्म दक्षिण के तमिल प्रदेश के तिरुमल्लै नामक ग्राम में विक्रम सं. 49 में हुआ था। आचार्य श्री ने बहुत वर्षों तक तमिल प्रदेशों में ही भ्रमण किया व धर्मप्रभावना की। उनकी साधना स्थली भी तमिल प्रदेश के जंगल ही थे। इससे भी सिद्ध होता है कि पल्लीवालों का संबंध दक्षिण के तमिल प्रदेश से रहा है। अतः पल्लीवाल जाति का उद्गम स्थान तमिल प्रदेश ही रहा है। इस प्रसंग से पल्लीवाल जाति की उत्पत्ति का समय आचार्य कुन्द–कुन्द से पूर्व का ही (ईसा पूर्व पहली शताब्दी) होना चाहिए। बहुत समय तक पल्लीवाल दक्षिण के तमिल प्रदेश में रहते रहे। कालान्तर में ये उत्तर भारत की ओर पलायन कर गये। विक्रम की दसर्वी शताब्दी तक ये लोग कन्नौज तथा इटावा अंचल में फैल गये तथा अंतिम रूप से यहीं रहने लगे। विक्रम की तेरहवीं शताब्दी के मध्य तक ये पल्लीवाल जैन बिना किसी कठिनाई के यहां आनन्द पूर्वक रहते रहें।

वि.सं. 1251 (सन् 1194) में मोहम्मद गौरी जब बनारस की ओर जा रहा था, तब उसकी मुठभेड़ उस समय के इटावा अंचल के प्रमुख नगर चन्द्रवाड़ (निकट फिरोजाबाद) में राजा जयचन्द गहड़वाल से हो गई, जिसमें राजा जयचन्द्र जो कि हाथियों के हौदे पर बैठा था और सैन्य संचालन कर रहा था, सहसा शत्रु का तीर लगने से मर गया। राजा जयचन्द्र की सेना भाग खड़ी हुई। मोहम्मद गौरी ने चन्द्रवाड़ को खूब लूटा। चन्द्रवाड़ की समृद्धि का संकेत देते अनेक प्राचीन जिन बिम्ब एवं जिनमंदिरों के खंडहर आज भी विद्यमान है। फिरोजाबाद के चन्द्रप्रभु दिगम्बर जैन मंदिर में विराजमान भगवान चन्द्रप्रभु चन्द्रवाड़ के समीप यमुना से ही मिली है। वह 1400 ऊँटों पर लूट का सामान भरवा कर ले गया। उस समय चन्द्रवाड़ में मुख्यतः चौहान तथा पल्लीवाल जैन निवास करते थे। युद्ध तथा उसके बाद लूट–पाट के कारण यहां की जनता को बहुत कष्ट उठाने पड़े। अधिकतर लोग चन्द्रवाड़ छोड़कर अन्यत्र चले गये। चौहान वंशी लोग मारवाड़ की ओर चले गये तथा पल्लीवाल जैन मुरैना (मध्य प्रदेश) में बस गये। इस युद्ध के समय कन्नौज का शासन राजा जयचन्द्र का पुत्र हरीशचन्द्र देख रहा था। जहां चन्द्रवाड़ के युद्ध का कोई असर नहीं हुआ। कन्नौज का राजा हरीशचन्द्र के नेतृत्व में सुरक्षित था। अतः वहां के निवासी पल्लीवाल जैनों को कहीं भी विस्थापित होने की आवश्यकता नहीं हुई किंतु कालान्तर में व्यापार के उद्देश्य से ये पल्लीवाल अलीगढ़, फिरोजाबाद, चन्द्रवाड़ और कचौड़ाघाट में फैल गये।

सम्प्रति विदर्भ (महाराष्ट्र) क्षेत्र में रहने वाले पल्लीवाल जैनों का मानना है कि इस क्षेत्र में बसने वाले पल्लीवाल दो रास्तों से यहां आए। एक वर्धा होते हुए तथा दूसरे छिंदवाड़ा की ओर से। बाद में यह ये सभी पल्लीवाल विदर्भ में बस गये। पिछले लगभग 200–250 वर्ष से ये लोग यहां पर ही बसे हुए हैं। यहां इनके परिवारों की संख्या लगभग 200 है। ये भी पल्लीवाल जाति की मुख्य धारा से अलग हो गये।

गत शताब्दी में पल्लीवाल जैन निवास स्थल की दृष्टि से मुख्यतः चार भागों में बंट गये हैं– कन्नौज, मुरैना, जगरौठी तथा आगरा और नागपुर। बहुत समय तक तो यही माना जाता रहा कि ये चारों घटक अलग–अलग जातियां हैं, लेकिन यह सही नहीं है। पल्लीवाल जाति के लोग विभिन्न परिस्थितियों में अलग–अलग समूहों में बंट गये थे। मूलतः यह चारों एक ही जाति के अंग हैं। इनके गोत्रों के तुलनात्मक अध्ययन से पता चलता है कि बहुत से गोत्र चारों घटकों में मिलते हैं। निश्चित ही ये गोत्र जाति के समूहों में बंटने से पूर्व के हैं। जो गोत्र आपस में नहीं मिलते वे या तो इन घटकों के विघटन के बाद के हैं, अन्यथा उन गोत्रों के वंशज अब अन्य घटकों में नहीं रहे।

आज हम पल्लीवाल जाति को जिस रूप में देखते हैं। उसमें पल्लीवाल जैन के विभिन्न घटकों के साथ–साथ सिकन्दरा (आगरा), पालम दिल्ली के निकट) तथा अलवर के जैसवाल तथा सैलवाल जाति के लोग भी सम्मिलित है। इन जातियों ने लगभग 150 वर्ष पूर्व से ही पल्लीवाल में विवाह संबंध स्थापित कर लिये थे। अब ये पल्लीवाल जाति के ही विभिन्न अंग बन गये हैं। इन जातियों ने भी स्वंय को पल्लीवाल जाति में विलीन कर लिया है।

पल्लीवाल जैन जाति के लोगों ने जैन समाज के उत्थान में महती योगदान दिया है। भले ही आज इतिहासकार इस बात की पुष्टि नहीं कर पाये है कि आचार्य कुन्द–कुन्द पल्लीवाल जैन जातीय थे किन्तु छहढ़ाला के रचनाकार **कविवर श्री दौलतराम जी,** महावीर जी के प्रसिद्ध मंदिर के निर्माता **जोधराम दीवान,** संस्कृत भाषा के मूर्धन्य **कवि धनपाल** निर्विवाद रूप से पल्लीवाल जाति के थे एवं उन्होंने निर्ग्रन्थ दिगम्बर जैन धर्म की प्रभावना में महती योगदान दिया है।

बीसवीं शताब्दी के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. वैद्य गुलजारीलाल जी एवं श्री चिमनलाल जी जैन (आगरा) तथा उत्तर भारत में बाहुबली की विशालकाय मूर्ति के निर्माता सेठ श्री छदामीलाल जी जैन फिरोजाबाद मातृभूमि पर प्राण न्यौछावर करने वाले लेफ्टिनेंट गौतम जैन भी पल्लीवाल जाति के ही थे। वर्तमान में आचार्य श्री मेरुभूषण जी महाराज, आर्यिका श्री विभूषणमति माताजी, श्रमण परम्परा के गौरव हैं। श्री स्वरूपचन्द्र जी मार्सन्स (आगरा), श्री सुमत प्रकाश जैन (इन्दौर), सन्मति वाणी के सम्पादक श्री जयसेन जैन, अनेक उद्योगपति, शासकीय अधिकारी उन नामों में सम्मलित हैं जो समाज का नाम रौशन कर रहे हैं। पल्लीवाल जैन समाज की 24 युवा प्रतिभाओं का इन्दौर में कुछ वर्ष पूर्व गरिमापूर्ण सम्मान किया गया था। 20वीं शताब्दी में भी 2 दर्जन के लगभग मुनि, आर्यिका इस जाति के हुए हैं। इस जाति के बन्धुओं/बहनों का वर्तमान भी बहुत उज्ज्वल है जो सम्पूर्ण जैन समाज के गौरव को बढ़ायेगा यह पूर्ण विश्वास है।

***–डॉ. अनुपम जैन***
*ज्ञानछाया, डी–14, सुदामानगर, इन्दौर*

# शंका समाधान

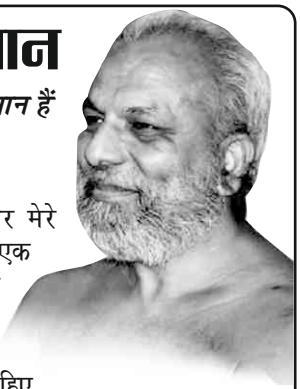

***जब कण-कण में भगवान हैं तो मंदिर जाने की क्या आवश्यकता है?***

एक बार एक परिवार मेरे पास आया, उनके साथ एक बच्चा भी था जो कि एमबीए की पढ़ाई कर रहा था। परिवार के लोगों ने कहा– 'महाराज, इससे कहिए यह मंदिर जाए। मैंने कुछ कहने की अपेक्षा से जब उसकी तरफ देखा, तो उसने कहा– 'महाराज! भगवान तो सब जगह हैं, हम मंदिर क्यों जाएं?' हमने कहा– 'बिल्कुल ठीक कहते हो! यह बताओ हवा सब जगह है?' बोला– 'हाँ, हवा भी सब जगह है।' 'हवा सब जगह है तो अपनी गाड़ी में हवा भरनी होती है, तब क्या करते हो? कहीं से भी हवा लेकर भर लेते हो?' 'नहीं महाराज जी! उसके लिए तो हमें फिलिंग स्टेशन में जाना पड़ता है।' 'फिलिंग स्टेशन में क्यों जाते हो?' 'क्योंकि महाराज जी, सब जगह हवा है पर वैसा प्रेशर नहीं है कि हम गाड़ी के टायर में भर सकें, उसके लिए फिलिंग स्टेशन में ही जाना पड़ता है।' तो मैंने उसको इतना ही समझाया कि **'भैया! मान लिया, जैसे हवा सब जगह है, वैसे भगवान भी सब जगह है। लेकिन प्रेशर तो मंदिर में ही मिलता है, जहां तुम अपने आप को रिचार्ज कर सको, हर जगह नहीं मिल सकता।'**

इसलिए मंदिर का काम मंदिर में ही होगा, भगवान सब जगह है, लेकिन सब जगह हमें भगवान दिखते कहां है? मंदिर में जाते ही हमारी भाव धारा बदल जाती है, यही तो मंदिर के वातावरण का प्रभाव है। इसलिए नित्य मंदिर जाना चाहिए।

***संकलन : निशा जैन***
*सी–15/70, बाल नगर, करतारपुरा, जयपुर*

## पत्रिका सहायता

★ **श्री सतीश चंद जी जैन** निवासी डब्ल्यू जेड–1198, पालम गांव, नई दिल्ली ने अपनी पुत्री सीमा जैन (सी.ए.) के दिनांक 1 दिसंबर 2020 के शुभ अवसर पर पत्रिका सहायता हेतु रु. 500/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 2439)*

★ **श्री महेंद्र पालावत जी** (अलवर) ने अपने सुपुत्र चि. सार्थक संग सौ.कां. बुलबुल सुपुत्री श्री नीरज जैन, द्वारका सेक्टर–7, नई दिल्ली के विवाह उत्सव के उपलक्ष में पत्रिका को रु. 1100/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 2437)*

★ **श्री नीरज जैन** (Barangmavale) द्वारका, सेक्टर–7, नई दिल्ली ने अपनी सुपुत्री सौ.कां. बुलबुल संग चि. सार्थक सुपुत्र श्री महेंद्र पालावत निवासी अलवर के विवाह उत्सव के उपलक्ष्य में पत्रिका को रु. 1100/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 2438)*

★ **श्रीमती रामवती जी जैन** (धर्मपत्नी स्व. श्री श्रीचन्द जी जैन,अंगूठी आगरा वाले) ने अपने सुपौत्र चि. दीपक (सुपुत्र श्रीमती सुनीता जैन एवं श्री विमल चन्द जैन) संग सौ.कां. विधि (मीनल) सुपुत्री श्रीमती नीरा जैन एवं श्री जिनेश कुमार जैन, नौगांवा, अलवर के दिनांक 9.12.2020 को सम्पन्न शुभ विवाहोपलक्ष पर रु. 1100/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. डी–2415)*

★ **श्री नरेश चन्द जी जैन,** ए–54, त्रिवेणी नगर, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर ने अपने सुपुत्र चि. सौरभ संग सौ.कां. इतिशा के दिनांक 25.11.2020 को सम्पन्न शुभ विवाहोपलक्ष पर रु. 1100/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. डी–2409)*

★ **श्री शैलेन्द्र कुमार जी जैन,** फ्लेट नं. 403, सुमेरू ओजस, आर.के.पुरम, कोटा ने अपनी सुपुत्री सौ.कां. इतिशा संग चि. सौरभ के दिनांक 25.11.2020 को सम्पन्न शुभ विवाहोपलक्ष पर रु. 1100/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. डी–2408)*

★ **श्रीमती इन्द्रा जी जैन** (धर्मपत्नी स्व. श्री प्रमोद जी जैन) जैन पेट्रोल पम्प, लक्ष्मणगढ़, अलवर ने अपने सुपुत्र चि. नवीन जैन संग सौ.कां. पूजा जैन सुपुत्री श्रमती मुन्नी जैन एवं श्री सुभाष चन्द जैन कोटा बरगमां वाले के दिनांक 29.01.2020 को सम्पन्न शुभ विवाहोपलक्ष पर रु. 501/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. डी–2410)*

★ **श्री प्रकाश चन्द जी जैन** पुत्र स्व. श्री कपूर चन्द जी जैन (रामगढ़) वर्तमान निवासी गैलेक्सी अपार्टमैन्ट, न्यू फ्रेन्ड्स कॉलोनी, अलवर ने अपनी सुपुत्री सौ.कां. मेघा जैन संग चि. दीपक जैन सुपुत्र श्री शिखर चन्द जैन (गोविन्दगढ़) वर्तमान निवासी रामनगर, सोडाला, जयपुर के दिनांक 9.12.2020 को सम्पन्न शुभ विवाहोपलक्ष पर रु. 1100/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. डी–2412)*

★ **श्री मुकेश कुमार जी जैन** निवासी कोटा ने अपने सुपुत्र चि. प्रतीक जैन संग सौ.कां. मेघा जैन सुपुत्री श्री महेश चन्द जी जैन निवासी नोगांवा, अलवर के दिनांक 30.11.2020 को सम्पन्न शुभ विवाहोपलक्ष पर रु. 1000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. डी–2435)*

★ **श्री महेश चन्द जी जैन** निवासी नोगांवा, अलवर ने अपनी सुपुत्री सौ.कां. मेघा जैन संग चि. प्रतीक जैन सुपुत्र श्री मुकेश कुमार जी जैन निवासी कोटा के दिनांक 30.11.2020 को सम्पन्न शुभ विवाहोपलक्ष पर रु. 500/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. डी–2436)*

★ **श्रीमती विनय जी जैन एवं श्री सुरेश चन्द जी जैन** (नगला मई वाले) डी–3, संजय नगर, भरतपुर ने अपने सुपुत्र चि. गौरव संग सौ.कां. अंजली सुपुत्री श्रीमती अंजू जैन एवं श्री गिरीश कुमार जी जैन (कजानीपुर वाले) शिव कॉलोनी, हिण्डौन सिटी के दिनांक 11.12.2020 को सम्पन्न शुभ विवाहोपलक्ष पर रु. 1100/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. डी–2411)*

★ **श्री शशांक जी जैन,** ए–68, कुम्भा नगर, चित्तौड़गढ़ ने अपने पूज्य पिताजी स्व. श्री कुशल चन्द जी जैन (रामगढ़ अलवर वाले) की पुण्य स्मृति में रु. 1100/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. डी–2433)*

★ **श्री महेश चन्द जी जैन** गंगापुरसिटी ने अपने सुपुत्र चि. वोमेन्द्र जैन का शुभ विवाह सौ.कां. प्रियंका जैन सुपुत्री श्री विमल चन्द जी जैन नदबई (भरतपुर) के संग दिनांक 9 दिसम्बर 2020 को सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में रु. 501/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. डी–2434)*

## विधवा सहायता

**श्री शिखर चन्द जी जैन एवं श्रीमती त्रिशला जी जैन** (मुबारिकपुर वाले), 83 चेतन एन्क्लेव–द्वितीय, अलवर ने अपनी शादी के 50 वर्ष (दि. 7.12.2020) पूर्ण होने पर विधवा सहायता हेतु रु. 12,000/– सप्रेम भेंट किये। *(र.सं. 4836)*

## महासभा सहायता

★ **श्रीमती रामवती जी जैन** (धर्मपत्नी स्व. श्री श्रीचन्द जी जैन,अंगूठी आगरा वाले) ने अपने सुपौत्र चि. दीपक (सुपुत्र श्रीमती सुनीता जैन एवं श्री विमल चन्द जैन) संग सौ.कां. विधि (मीनल) सुपुत्री श्रीमती नीरा जैन एवं श्री जिनेश कुमार जैन, नौगांवा, अलवर के दिनांक 9.12.2020 को सम्पन्न शुभ विवाहोपलक्ष पर रु. 1100/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 1791)*

★ **श्री नरेश चन्द जी जैन,** ए–54, त्रिवेणी नगर, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर ने अपने सुपुत्र चि. सौरभ संग सौ.कां. इतिशा के दिनांक 25.11.2020 को सम्पन्न शुभ विवाहोपलक्ष पर रु. 1100/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4786)*

★ **श्री शैलेन्द्र कुमार जी जैन,** फ्लेट नं. 403, सुमेरू ओजस, आर.के.पुरम, कोटा ने अपने सुपुत्री सौ.कां. इतिशा संग चि. सौरभ के दिनांक 25.11.2020 को सम्पन्न शुभ विवाहोपलक्ष पर रु. 1100/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4787)*

★ **श्रीमती इन्द्रा जी जैन** (धर्मपत्नी स्व. श्री प्रमोद जी जैन) जैन पेट्रोल पम्प, लक्ष्मणगढ़, अलवर ने अपने सुपुत्र चि. नवीन जैन संग सौ.कां. पूजा जैन सुपुत्री श्रमती मुन्नी जैन एवं श्री सुभाष चन्द जैन कोटा बरगमां वाले के दिनांक 29.01.2020 को सम्पन्न शुभ विवाहोपलक्ष पर रु. 501/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4788)*

★ **श्री मुकेश कुमार जी जैन** निवासी कोटा ने अपने सुपुत्र चि. प्रतीक जैन संग सौ.कां. मेघा जैन सुपुत्री श्री महेश चन्द जी जैन निवासी नोगांवा, अलवर के दिनांक 30.11.2020 को सम्पन्न शुभ विवाहोपलक्ष पर रु. 1100/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4792)*

★ **श्री महेश चन्द जी जैन** निवासी नोगांवा, अलवर ने अपनी सुपुत्री सौ.कां. मेघा जैन संग चि. प्रतीक जैन सुपुत्र श्री मुकेश कुमार जी जैन निवासी कोटा के दिनांक 30.11.2020 को सम्पन्न शुभ विवाहोपलक्ष पर रु. 500/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4793)*

★ **श्रीमती विनय जी जैन एवं श्री सुरेश चन्द जी जैन** (नगला मई वाले) डी–3, संजय नगर, भरतपुर ने अपने सुपुत्र चि. गौरव संग सौ.कां. अंजली सुपुत्री श्रीमती अंजू जैन एवं श्री गिरीश कुमार जी जैन (कजानीपुर वाले) शिव कॉलोनी, हिण्डौन सिटी के दिनांक 11.12.2020 को सम्पन्न शुभ विवाहोपलक्ष पर रु. 1100/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4790)*

★ **श्री शशांक जी जैन,** ए–68, कुम्भा नगर, चित्तौड़गढ़ ने अपने पूज्य पिताजी स्व. श्री कुशल चन्द जी जैन (रामगढ़ अलवर वाले) की पुण्य स्मृति में रु. 1100/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4863)*

## पत्रिका सदस्यता

**3084.** **Sh. Shashank Ji Jain,** 31, Shivam Residency, Near Meer Villa, Koali, Vadodra-391330 (Gujarat), Mob.: 9729734451 *(CR D-2433)*

**3085.** **Sh. Yogesh Kumar Ji Jain,** 22, Radha Nikunj-B, Iskon Road, Mansarovar, Jaipur-302020 *(CR D-2407)*

**3086.** **Sh. Dinesh Kumar Ji Jain,** P.No. 34, Silver Moon Residency, Krishna Sagar Dholai, Near Jain Mandir, Muhana Road, Mansarovar, Jaipur-302020, Mob.: 6375025680 *(CR D-2413)*

**3087.** **Sh. Tarun Kumar Ji Jain** C/o Sh. Rajendra Kumar Jain, 82, Adarsh Colony, Daudpur, Alwar-301001, Mob.: 9779517456 *(CR D-2414)*

**3088.** **Sh. Anil Kumar Ji Jain** S/o Sh. Prem Chand Jain, RZ-C 81/61A Mahavir Enclave, Part-I, Gali No. 9, Palam, New Delhi-110045, Mob.: 9953260052 *(CR D-2440)*

**3089.** **Sh. Manoj Kumar Ji Jain,** D-127, Left Side First Floor Jhilmil Colony, Near Thana, Vivek Vihar, New Delhi-110095, Mob.: 9810009822 *(CR D-2442)*

**3090.** **Sh. Rajendra Kumar Ji Jain** S/o Late Sh. Mool Chand Jain (Alwar Wale), H.No. A-28, Flat No. 201, Manushree Residency, Dadudayal Nagar, Muhana Mandi Road, Mansarovar, Jaipur-302020, Mob.: 9413630825 *(CR D-2430)*

**3091.** **Sh. Paras Chand Ji Jain,** B-Block, 1178, Anand Nagar, Gwalior-474002 (M.P.), Mob. 9425128745 *(CR D-1851)*

**3092.** **Sh. Saurabh Jain "Shastri",** 301, Surya Hero Niketen Tikonia, Balanganj, Agra-282004, Mob.: 7500396456 *(CR D-2445)*

पूज्य पिताजी स्व. श्री कपूरचन्दजी जैन व माताजी स्व. श्रीमती अंगूरी देवी जैन की
पुण्य स्मृति में

# विमल चन्द जैन (रेता वाले)

## ग्रुप ऑफ कम्पनीज

DEALERS & SUPPLIERS OF SILICA SAND & OTHER GLASS RAW MATERIAL

AKHIL JAIN (M) 9899823557 • ANKIT JAIN (M) 9837478564

★ The Rajasthan Silica Sand Suppliers
★ Santosh Mineral & Chemical Co.
★ S.B. Jain Mineral Enterprises
★ Super Fine Mineral Traders
★ Shree Vimal Silica Traders
★ Quality Silica Traders

128-129, गणेश नगर,
सेक्टर प्रथम,
पानी की टंकी के सामने,
फिरोजाबाद (उ.प्र.)
सम्पर्क : 098372-53305
090128-74922
05612-260096

# प्रथम पुण्यतिथि पर
# भावभीनी श्रद्धांजलि

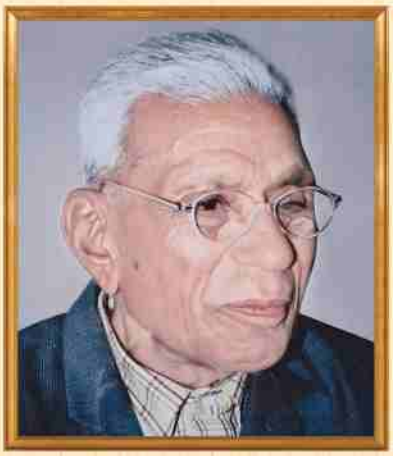

## स्व. श्री कस्तूरचंद जी जैन
*( मंडावर वाले )*

( जन्म : 06.01.1932 - स्वर्गवास : 18.12.2019 )

*आपका स्नेह, सद्व्यवहार, सेवा भावना, एवं प्रेरणादायक चरित्र हमारी स्मृति में सदा रहेगा एवं सदैव मार्गदर्शन करता रहेगा। हम सभी परिवारजन आपको शत्-शत् नमन करते हुए अश्रुपूरित नेत्रों से श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।*

श्रद्धावनत

धर्मपत्नी :
श्रीमती उर्मिला जैन

*पुत्र-पुत्रवधु :*
भागचंद-साधना
विमल-रीता
*पौत्र-पौत्रवधु :*
तन्मय-प्रतिभा
*पौत्र :*
राजा, चिन्मय
*पौत्री-पौत्री दामाद :*
निहारिका-प्रियांक

*पुत्री-दामाद :*
कुसुम-महावीर
*दोहता-दोहता वधु :*
हिमांशु-शिप्रा
*दोहती-दोहती दामाद :*
ऋतु-अंकित
*दोहित्री :*
हृदयांशी

*निवास :* ए-57, नित्यानन्द नगर, क्वीन्स रोड, जयपुर-302021

# श्रद्धा सुमन

## स्व. श्री शिव कुमार जी पालीवाल
(मंडावर वाले)

हम सभी परिवारजन आपके देवलोक गमन ( दिनांक 25 नवम्बर 2020 ) पर
प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि आपको अपने श्रीचरणों में स्थान प्रदान करें।

आपका स्नेह, सद्व्यवहार, सेवा भावना, धर्म के प्रति आस्था एवं
प्रेरणादायक चरित्र हमारी स्मृति में सदैव अंकित रहेगा एवं मार्गदर्शन करता रहेगा।
हम सभी आपको शत्-शत् नमन करते हुए भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

**श्रद्धावनत**

*पत्नी :*
श्रीमती प्रमिला पालीवाल

*पुत्री-दामाद :*
चारू जैन-दीपक जैन

*नवासा, नवासी :*
सिद्धन्त जैन, खुशी जैन

*भाई-बहु :*
अशोक पालीवाल-मृदुला पालीवाल

*भतीजी-भतीजी दामाद :*
रानू जैन-नीरज जैन

*नवासी, नवासा :*
प्रीशा जैन, अरहन जैन

*भतीजा-भतीजा बहु :*
डॉ. धीरेन पालीवाल-सुरभि पालीवाल

*पोती, पोता :*
धरा पालीवाल, नभ पालीवाल

**शिव प्रेम चैरिटेबल ट्रस्ट**

*निवास :* 93/55, अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर-302020
मो.: 9414045880, 8764295905, 9414845451

*With Best Compliments From*

**Authorised Distributor for**

- ★ Johnson & Johnson Ltd.
- ★ SD. BIO SENSOR
- ★ Ortho Clinical Diagnostics
- ★ Lifescan-Division, for one touch Brand Glucometers & Strips.
- ★ Biorad Laboratories
- ★ Alere Medical
- ★ Transasia Biomedical Ltd.
- ★ LILAC Medicare

**Sanjay Jain - Rajeev Jain**

# S.R. Enterprises

223, Bichoon Market, Kishanpole Bazar, Jaipur-302 003
Ph.: (O) 2322089, 2323903 (R) 2546017 • Fax : 0141-4022089
(M) +91-98290 12628, 94140 76265

कहानी

# सच्चा हीरा

जो विपरीत परिस्थितियों में भी सुदृढ़ रहता है– वही सच्चा हीरा है।

सर्दियों के दिन थे, इसीलिये राजा का दरबार खुले में लगा था। पूरी आम सभा सुबह की धूप में बैठी थी। पंडित लोग, दीवान आदि सभी दरबार में बैठे थे। राजा के परिवार के सदस्य भी बैठे थे। महाराज ने सिंहासन के सामने एक मेज रखवा रखी थी। उसी समय एक व्यक्ति आया और राजा से दरबार में मिलने की आज्ञा मांगी। प्रवेश मिल गया तो उसने कहा, मेरे पास दो वस्तुएँ हैं, बिलकुल एक जैसी लेकिन एक नकली है और एक असली, मैं हर राज्य के राजा के पास जाता हूँ और उन्हें परखने का आग्रह करता हूँ, लेकिन कोई परख नहीं पाता, सब हार जाते हैं और मैं विजेता बनकर घूम रहा हूँ। अब आपके नगर मे आया हूँ।

राजा ने उसे दोनों वस्तुओं को पेश करने का आदेश दिया। तो उसने दोनों वस्तुयें टेबल पर रख दीं। बिल्कुल समान आकार समान रुप रंग, समान प्रकाश, सब कुछ नख शिख समान। राजा ने कहा, ये दोनों वस्तुएँ एक हैं, तो उस व्यक्ति ने कहा, हाँ दिखाई तो एक सी देती है लेकिन हैं भिन्न। इनमें से एक है बहुत कीमती हीरा और एक है काँच का टुकडा, लेकिन रूप रंग सब एक है। कोई आज तक परख नहीं पाया कि कौन सा हीरा है और कौन सा काँच? कोई परख कर बताये कि ये हीरा है या काँच। अगर परख खरी निकली तो मैं हार जाऊँगा और यह कीमती हीरा मैं आपके राज्य की तिजोरी में जमा करवा दूँगा, यदि कोई न पहचान पाया तो इस हीरे की जो कीमत है उतनी धनराशि आपको मुझे देनी होगी। इसी प्रकार मैं कई राज्यों से जीतता आया हूँ।

राजा ने कई बार उन दोनों वस्तुओं को गौर से देखकर परखने की कोशिश की और अंत में हार मानते हुए कहा– मैं तो नहीं परख सकूंगा। दीवान बोले– हम भी हिम्मत नहीं कर सकते, क्योंकि दोनो बिल्कुल समान है। सब हार मानने लगे, कोई हिम्मत नहीं जुटा पाया। हारने पर पैसे देने पड़ेंगे, इसका किसी को कोई मलाल नहीं था क्योंकि राजा के पास बहुत धन था लेकिन राजा की प्रतिष्ठा गिर जायेगी, इसका सबको भय था। कोई व्यक्ति पहचान नहीं पाया। आखिरकार पीछे थोड़ी हलचल हुई। एक अंधा आदमी हाथ में लाठी लेकर उठा। उसने कहा, मुझे महाराज के पास ले चलो, मैंने सब बाते सुनी हैं और यह भी सुना कि कोई परख नहीं पा रहा है। एक अवसर मुझे भी दो। एक आदमी के सहारे वह राजा के पास पहुंचा उसने राजा से प्रार्थना की– मैं तो जन्म से अंधा हूँ फिर भी मुझे एक अवसर दिया जाये जिससे मैं भी एक बार अपनी बुद्धि को परखूँ और हो सकता है कि सफल भी हो जाऊँ और यदि सफल न भी हुआ तो वैसे भी आप तो हारे ही हैं। राजा को लगा कि इसे अवसर देने मे कोई हर्ज नहीं है और राजा ने उसे अनुमति दे दी। उस अंधे आदमी को दोनों वस्तुएं उसके हाथ में दी गयी और पूछा गया कि इनमें कौन सा हीरा है और कौन सा काँच?

कहते हैं कि उस आदमी ने एक मिनट में कह दिया कि यह हीरा है और यह काँच। जो आदमी इतने राज्यों को जीतकर आया था वह नतमस्तक हो गया और बोला सही है, आपने पहचान लिया! आप धन्य हैं। अपने वचन के मुताबिक यह हीरा मैं आपके राज्य की तिजोरी मे दे रहा हूँ। सब बहुत खुश हो गये और जो आदमी आया था वह भी बहुत प्रसन्न हुआ कि कम से कम कोई तो मिला परखने वाला। राजा और अन्य सभी लोगों ने उस अंधे व्यक्ति से एक ही जिज्ञासा जताई कि, 'तुमने यह कैसे पहचाना कि यह हीरा है और वह काँच?' उस अंधे ने कहा– सीधी सी बात है राजन, धूप में हम सब बैठे हैं, मैंने दोनों को छुआ। जो ठंडा रहा वह हीरा, जो गरम हो गया वह काँच। यही बात हमारे जीवन में भी लागू होती है, जो व्यक्ति बात–बात में अपना आप खो देता है, गरम हो जाता है और छोटी से छोटी समस्याओं में उलझ जाता है वह काँच जैसा है और जो विपरीत परिस्थितियों में भी सुदृढ़ रहता है और बुद्धि से काम लेता है वही सच्चा हीरा है।

*संकलन : चन्द्रशेखर जैन*
*जयपुर*

# स्याद्वाद और अनेकांतवाद

स्याद्वाद और अनेकांतवाद जैन दर्शन की मानव जाति को महानतम देन है। यदि एकमात्र यही सिद्धान्त मानव जाति अपने गले उतार ले तो आज असहनशीलता, असहिष्णुता, आतंक, एकपक्षवाद, अहंकार से जो हम संघर्ष कर रहे हैं वे कब के मिट जाएंगे।

स्याद्वाद वह दार्शनिक पद्धति है जो मनुष्य को किसी वस्तु के विषय में भिन्न–भिन्न दृष्टिकोणों से विचार करने की समझ प्रदान करती है।

स्याद्वाद स्यात् और वाद शब्दों के जोड़ से मिलकर बना है। स्यात् का अर्थ है– 'किसी अपेक्षा से', 'किसी प्रकार से'। स्यात् कथंचित् का पर्याय है। जब स्यात् शब्द प्रयुक्त कर किसी वस्तु को इंगित किया जाता है तो इसका अर्थ होता है कि कथन किसी विशिष्ट अपेक्षा से किया जा रहा है। उदाहरण के लिए 'स्यात् अस्ति घटः' इसका अर्थ है कि किसी विशिष्ट अपेक्षा से यह घड़ा है।

स्यात् शब्द का अर्थ 'हो सकता है', 'शायद', प्रसम्भाव्य, कथंचित, आदि लगाना अनुचित है। इसी प्रकार अंग्रेजी भाषा में स्याद् पद का अर्थ It may be, perhaps, perchance आदि लगाया जाए तो यह गलत है। इसका अंग्रेजी भाषा में अर्थ होगा– 'Under certain circumstances.'

स्याद्वाद के अन्य लक्षणों को इंगित करते हुए कहा गया है कि जो सापेक्षता की सिद्धि करता है वह स्यात् शब्द कहा गया है। स्याद्वाद ज्ञान की सापेक्षता का सिद्धांत है। किसी वस्तु के किसी एक ही पक्ष को देखकर उसके स्वरूप का निर्णय करना एकांत निर्णय है और इसलिए वह गलत है। स्याद्वाद अनुसार किसी भी विषय का निर्णय करने से पहले के उसके हर पहलू की जांच करनी चाहिए। प्रत्येक वस्तु के अनेक पक्ष होते हैं। इतना ही नहीं प्रत्येक वस्तु में आपस में विरोधी अनन्तगुण धर्मात्मक अनेक प्रकार की विविधताएं भरी हुई हैं।

जो वस्तु तत्त्व रूप है, वह अतत्त्वरूप भी है। जो वस्तु सत् है, वह असत् भी है। जो एक है, वह अनेक भी है। जो नित्य है वह अनित्य भी है। इस प्रकार हर एक वस्तु परस्पर विरोधी गुणधर्मों से भरी हुई है। 'स्यात्' शब्द जिस धर्म के साथ प्रयुक्त होता है, उसकी स्थिति कमजोर न करके वस्तु में रहने वाली तत्प्रतिपक्षी धर्म की सूचना देता है। स्याद्वाद में दो विरोधी बातों का सामंजस्य दिखाया जाता है। जब किसी व्यक्ति ने आचार्य से पूछा कि स्याद्वाद क्या है? तो आचार्य ने कनिष्ठा व अनामिका सामने करते हुए पूछा ''दोनों में बड़ी कौनसी है?'' उत्तर मिला– ''अनामिका'' कनिष्ठा को समेटकर और मध्यमा को फैलाकर पूछा– ''दोनों अंगुलियों में छोटी कौनसी है?'' उत्तर मिला– ''अनामिका''। आचार्य ने कहा– ''यही हमारा स्याद्वाद है। तुम एक ही अंगुली को बड़ी भी कहते हो और छोटी भी। यह स्याद्वाद की सहजगम्यता है।''

जैन दर्शन में सत् की परिभाषा देते हुए कहा गया है कि जो उत्पत्ति, विनाश और ध्रुवता से युक्त है वह सत् है। सत् की यह परिभाषा भी स्याद्वाद का समर्थन करती है। एक ही वस्तु में उत्पत्ति, विनाश और ध्रुवता विरोधी गुण कैसे हो सकते हैं। इस पर आचार्यों का कहना है कि जिस प्रकार एक स्वर्णकार स्वर्णकलश तोड़कर स्वर्णमुकुट बना रहा है। उसके पास तीन ग्राहक आए। इनमें से एक को स्वर्ण घट चाहिए, दूसरे को स्वर्ण मुकुट, तीसरे को केवल स्वर्ण। इस पर पहले व्यक्ति को दुख हुआ क्योंकि घट तोड़ा जा रहा था, दूसरे को हर्ष हुआ क्योंकि स्वर्ण मुकुट तैयार किया जा रहा था, तीसरा मध्यस्थ भावना में रहा क्योंकि उसे तो स्वर्ण से काम था। इस प्रकार एक ही स्वर्ण में उसी समय एक विनाश देख रहा है दूसरा उत्पत्ति देख रहा है और तीसरा ध्रुवता देख रहा है।

जैन दर्शन में स्याद्वाद के प्रतिपादन हेतु छः अंधों द्वारा एक हाथी के वर्णन की कहानी दी गई है। इसमें पहले व्यक्ति ने हाथी का पेट छुआ और कहा– ''हाथी दीवार की तरह होता है''। दूसरे अंधे व्यक्ति ने हाथी के केवल दांत को छुआ था, उसने कहा– ''हाथी तो बिल्कुल भाले जैसा होता है''। तीसरे ने सूंड को छुआ और कहा– ''हाथी सांप की तरह होता है''। चौथे व्यक्ति ने हाथी के पैर को छुआ और उसे वृक्ष की तरह बताया। पाँचवे व्यक्ति ने हाथी के कान को स्पर्श कर कहा कि हाथी तो पंखे की तरह होता है। अंत में छठे व्यक्ति ने हाथी की पूंछ को टटोलकर कहा कि हाथी बिल्कुल रस्सी की तरह होता है। इस प्रकार सभी व्यक्ति अपने आंशिक ज्ञान को पूर्ण मान रहे हैं जबकि उन्हें केवल एक पक्ष का ही ज्ञान है। स्याद्वाद भी यही कहता है कि वस्तु के संबंध में हमारा ज्ञान एक दृष्टिकोण विशेष से

ही सत्य है, अन्य दृष्टि से वह असत्य भी हो सकता है।

स्याद्वाद से जुड़ा हुआ सिद्धांत है अनेकांतवाद। अनेकांतवाद और स्याद्वाद एक ही सिद्धांत के दो पहलू हैं। अनेकांत वस्तु के स्वरूप को देखने की विचार पद्धति है और स्याद्वाद देखे परखे हुए स्वरूप को अभिव्यक्त करने की भाषा पद्धति है। अनेकांत दार्शनिक दृष्टि है और स्याद्वाद उनकी भाषा।

अनेकांत का आधार नयवाद है। विरोधी धर्मों का निराकरण न करते हुए वस्तु के अंश या धर्म को ग्रहण करने वाला ज्ञाता का अभिप्राय नय है। उदाहरण के लिए फल का आकार भी है, रूप भी है, रस भी है, गंध भी है, और भी अनेक धर्म हैं। जब हम आकार की दृष्टि को देखते हैं तो फल हमें गोल, त्रिकोण या अन्य किसी आकार वाला प्रतीत होगा। रस की दृष्टि से देखने पर खट्टा–मीठा आदि प्रतीत होगा। इसी तरह अन्य धर्मों की दृष्टि से देखने पर वह वैसा ही दिखाई देगा। ये सब दृष्टियाँ नयवाद में समाविष्ट हो जाती हैं।

स्यादवाद का आधार है सप्तभंगीवाद। नय वाक्यों में स्यात् शब्द लगाकर बोलने वाले को प्रमाण कहते हैं। सप्तभंगीवाद प्रमाण है।

सप्तभंगीवाद के सात भंग इस प्रकार हैं– स्यात् अस्ति, स्यात् नास्ति, स्यात्–अस्ति च नास्ति च, स्यात् अवक्तव्य, स्यात् अस्ति च अवक्तव्यश्च, स्यात् नास्ति च अवक्तव्यश्च, स्यात् अस्ति च नास्ति च अवक्तव्यश्च।

प्रथम भंग विधेयात्मक विचार के आधार पर निर्मित है। इसमें वस्तु के अस्तित्व का विधेयात्मक ढंग से प्रतिपादन किया गया है। द्वितीय भंग का आधार निषेध है। इसमें वस्तु के अस्तित्व रूप का निषेध भी भाषा में विवेचन किया गया है। तृतीय भंग विधि और निषेध का क्रमशः प्रतिपादन करता है। चतुर्थ भंग विधि और निषेध का युगपत् प्रतिपादन करता है। दोनों का युगपत् प्रतिपादन करना वाणी की सामर्थ्य से बाहर है। अतः इसे अवक्तव्य कहा गया है। पंचम भंग विधि और अवक्तव्य दोनों का प्रतिपादन करता है। षष्ठ भंग निषेध और अवक्तव्य का विवेचन है। सप्तम भंग विधि, निषेध और अवक्तव्य का प्रतिपादक है।

स्याद्वाद का संबंध आइंस्टीन के सापेक्षवाद से भी जुड़ा है। 'अस्ति, नास्ति' की बात जैसे स्याद्वाद में पद–पद पर मिलती है, वैसे ही 'है' और 'नहीं' की बात सापेक्षवाद में भी पद–पद पर मिलती है। इस संबंध में आइंस्टीन ने प्रयोग द्वारा बतलाया– ''एक आदमी लिफ्ट में है। उसके हाथ में सेम है। ज्योंहि लिफ्ट नीचे गिरना शुरू होता है, वह आदमी सेम को गिराने के लिए हथेली को औंधा कर देता है। चूंकि लिफ्ट के साथ गिरने वाले मनुष्य की नीचे जाने की गति सेम से अधिक है, अतः मनुष्य को लगेगा कि सेम मेरी हथेली से चिपक रही है तथा मेरे हाथ पर उसका दबाव भी पड़ रहा है। परिणाम यह होगा कि पृथ्वी पर खड़े मनुष्य की अपेक्षा से तो सेम गुरुत्वाकर्षण से नीचे आ रही है, किन्तु लिफ्ट में रहे मनुष्य की अपेक्षा गुरूत्वाकर्षण कोई वस्तु नहीं है। इसलिए वह है भी और नहीं भी है।

आइन्सटीन कहते हैं– ''हम केवल आपेक्षिक सत्य को ही जान सकते हैं। संपूर्ण सत्य तो सर्वज्ञ के द्वारा ही ज्ञात है''।

प्रकृति में भी ऐसी ही स्थिति है ''गति और स्थिति सापेक्षिक धर्म है। एक जहाज जो स्थिर है, वह पृथ्वी की अपेक्षा से ही स्थिर है, लेकिन पृथ्वी सूर्य की अपेक्षा से गति में है और जहाज भी इसके साथ। यदि पृथ्वी भी सूर्य के चारों ओर घूमने से रूक जाए तो जहाज सूर्य की अपेक्षा से स्थिर हो जाएगा किन्तु तब भी दोनों इर्द–गिर्द के तारों की अपेक्षा गति करते रहेंगे।''

स्याद्वाद और सापेक्षवाद की यह समता ही आगे चलकर दर्शन और विज्ञान के बीच सेतु का कार्य करेगी ।

स्याद्वाद वह महान सिद्धांत है जिसका जीवन में प्रयोग करने पर दार्शनिक, धार्मिक व सांसारिक समस्याओं से पार पाया जा सकता है। दोष एकांगी दृष्टि का है यदि व्यक्ति दृष्टि विशेष की अपेक्षा से देखे तो सभी समस्याएँ बहुत छोटी हो जाएँगी।

स्याद्वाद एक ऐसा मार्ग है जो हमें इस संसार की प्रत्येक वस्तु को उसके सच्चे व वास्तविक रूप में समझने में सहायता करता है। अनेकांत दृष्टि प्राप्त होते ही जीवन में समभाव का उदय होना स्वाभाविक रूप से हो जाता है क्योंकि ऐसा होने पर हम किसी भी वस्तु अथवा घटना की समस्त मर्यादाओं, विभिन्न पहलुओं को जानते और विचारते हैं। द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव इत्यादि के बदलने पर उस वस्तु के स्वरूप में परिवर्तन आता है।

एक ही शरीर काल की अपेक्षा से बाल्यावस्था, यौवन, अधेड़ावस्था, वृद्धावस्था आदि अवस्थाओं में पहचान होती है। द्रव्य की अपेक्षा से वही शरीर कोमल,

मजबूत, स्वस्थ, पीड़ित, सशक्त, अशक्त आदि दिख पड़ता है। क्षेत्र भेद में वही अंग्रेज, भारतीय आदि रूप में जाना जाता है। भाव की अपेक्षा से वही मनुष्य सौम्य, रौद्र, शांत, अशांत, स्थिर–अस्थिर, रूपवान, कुरूप आदि दिखलाई पड़ता है।

अनेकांतवादी सोच से मानव को दूसरे का दृष्टिकोण समझने में अत्यंत सहायता मिलती है। दूसरे का दृष्टिकोण समझ आने पर उसके प्रति सहानुभूति की भावना उत्पन्न होती है । सहानुभूति उत्पन्न होने पर सहिष्णुता और सहनशीलता के भाव उत्पन्न होते है। वर्तमान युग में इन गुणों की अत्यन्त आवश्यकता है।

महात्मा गांधी ने कहा– ''स्याद्वाद मुझे बहुत प्रिय है। उससे मैने मुसलमानों की दृष्टि से उनका, ईसाईयों की दृष्टि से उनका, इस प्रकार अन्य सभी का विचार करना सीखा। मेरे विचारों को या कार्य को कोई गलत मानता, जब मुझे उसकी अज्ञानता पर पहले क्रोध आता था। अब मैं उनकी दृष्टि बिन्दु, उनकी आंखों से देख सकता हूँ, क्योंकि मैं जगत् प्रेम का भूखा हूँ। स्याद्वाद का मूल अहिंसा और सत्य का युगल है''।

डॉ. रामधारी सिंह दिनकर का अभिमत है– ''स्याद्वाद का अनुसंधान भारत की अहिंसा साधना का चरम उत्कर्ष है और सारा संसार इसे जितना शीघ्र अपनाएगा विश्व में शांति उतनी ही शीघ्र स्थापित होगी।''

***–डॉ. धीरज जैन***

*साभार : 'वर्तमान में वर्धमान'*

**शोक संवेदना**

# धर्मपरायण समाज सेवी एवं विधिवेत्ता

**स्व. श्री केशरी नंदन जी जैन** का जन्म 10.01.1933 में अलवर जिले में स्व. श्री बुद्धा लाल जी जैन एवं स्व. श्रीमती मनोहरी देवी जी जैन के परिवार में हुआ था। श्री केशरी नंदन जैन ने अपना 87 वर्ष का जीवन सरलता एवं सार्थकता के साथ सादा जीवन उच्च विचार से व्यतीत किया। उनके भरे पूरे परिवार में दो सुपुत्र दीपक एवं आलोक, पुत्रवधुएं विनीता व पूनम तथा चार सुपौत्र पलाश, दीक्षांत, नमन व यश हैं। सभी परिवारजन उनके शुभ आशीर्वाद से जीवन निर्माण के पथ पर अग्रसर हैं। श्री केशरी नंदन जी ने कम आयु में ही अलवर से जयपुर आकर केवल मात्र माता पिता के आशीर्वाद के सहारे कानूनी पढ़ाई पूर्ण करके राजस्थान उच्च न्यायालय व अन्य न्यायालयों में वकालत का पेशा प्रारंभ किया एवं अन्य प्रसिद्धियां हासिल की।

श्री केशरी नंदन जी का विवाह चन्द्रा स्टोर, अजमेर निवासी स्व. श्रीमती दयावती जैन के साथ वर्ष 1958 में संपन्न हुआ। श्री जैन अत्यंत सरल सौम्य मधुभाषी एवं बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। आज के आधुनिक युग में सारे परिवार को किस प्रकार से प्रेम के धागे व एकता के सूत्र में पिरो कर रखा जाता है, वे इसका जीता जागता उदाहरण थे।

श्री जैन वर्ष 1961 से जयपुर राजघराने महाराजा मानसिंह जी, महारानी गायत्री देवी, महाराजा भवानी सिंह जी की ओर से विभिन्न न्यायालयों में पैरवी की तथा लगभग 40 वर्षों तक राज परिवार के कानूनी सलाहकार रहे।

श्री केशरी नंदन जी का सक्रिय राजनीति एवं सामाजिक गतिविधियों तथा पल्लीवाल जैन समाज में भी विशिष्ट व अद्भुत योगदान रहा है। श्री जैन ने राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी में ऑल इंडिया सचिव व जनता पार्टी में भी नेशनल लीडर के रूप में काफी काम किया। श्री जैन ने अखिल भारतीय पल्लीवाल शाखा जयपुर के अध्यक्ष एवं महासभा के कार्यकारी अध्यक्ष एवं विभिन्न पदों पर रहते हुए पल्लीवाल जैन समाज के उत्थान के लिए काफी महत्वपूर्ण कार्य किए।

श्री जैन अत्यंत व्यस्त होने के बावजूद बेहद धार्मिक एवं आध्यात्मिक प्रकृति के व्यक्ति थे जो नियमित रूप से मंदिर दर्शन एवं पूजा करना उनकी दिनचर्या का अभिन्न भाग था। श्री जैन के संपूर्ण जीवन का अवलोकन करने से यही समझ आता है कि वह सच्चे अर्थों में जैन धर्म के सच्चे अनुयायी थे और एक आदर्श पुत्र, पति, पिता, दादा एवं नेक इंसान की एक जीती जागती मूर्ति थे जो निस्वार्थ भावना से लोगों के दुख दर्द दूर करने एवं पीड़ित मानव व समाज के उत्थान हेतु सदैव तत्पर रहते थे।

स्व. श्री केशरी नन्दन जैन निधन के समय 87 वर्ष की आयु पूर्ण कर अपने निज निवास 14, गंगा पथ, सूरज नगर, पश्चिम सिविल लाईन जयपुर में निवासरत थे। स्व. श्री केशरीनन्दन जैन के दिनांक 26.09. 2020 को देवलोक गमन से पल्लीवाल जैन समाज ने धर्मपरायण व सेवाभावी, सामाजिक कार्य में अग्रणी रहने वाले वरिष्ठ समाजसेवी को खो दिया है जिससे समाज को अपूर्णनीय क्षति हुई है।

अंत में उनके जीवन काल से यह सीख मिलती है कि जीवन में पारिवारिक सामाजिक एवं व्यवसायिक तालमेल बैठाकर एक उच्च स्तर का जीवन जिया जा सके और उनकी भाती सरल सच्चा वह गौरवशाली जीवन व्यतीत किया जा सके।

## विधवा सहायता

★ **श्रीमती उषा जी जैन** (धर्मपत्नी स्व. श्री सुभाष जी जैन) बी–252, वैशाली नगर, जयपुर ने विधवा सहायता हेतु रु. 12000/– भेंट किये। *(र.सं. 4784)*

★ **श्री शेखर चन्द जी जैन,** बी–252, वैशाली नगर, जयपुर ने विधवा सहायता हेतु रु. 12000/– भेंट किये। *(र.सं. 4785)*

★ **श्रीमती मुन्नी देवी जी जैन** धर्मपत्नी श्री सुमत चन्द जी जैन, ए–29, पुराना औद्योगिक क्षेत्र, काली मोरी, अलवर ने विधवा सहायता हेतु रु. 6000/– भेंट किये। *(र.सं. 4789)*

★ **श्री धर्मेन्द्र जी जैन,** 87, राम मोहन विहार, दयालबाग, आगरा ने अपने पूज्य पिताजी स्व. श्री भजनलाल जी जैन की पच्चीसवीं पुण्यतिथि पर रु. 12000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4833)*

★ **श्री रमेश चन्द जी जैन, पंकज जैन** 12, रेलवे रोड, पालम कॉलोनी, नई दिल्ली–110045 ने रु. 11000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4834)*

★ **श्री शशांक जी जैन,** ए–68, कुम्भा नगर, चित्तौड़गढ़ ने अपने पूज्य पिताजी स्व. श्री कुशल चन्द जी जैन (रामगढ़ अलवर वाले) की पुण्य स्मृति में रु. 3000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4835)*

★ **श्री राजेन्द्र प्रसाद जी जैन,** 128–एस डब्ल्यू बी, अलवर ने रु. 12000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4837)*

★ **श्री सुरेन्द्र जी जैन,** एच–119, अपना घर, शालीमार, अलवर ने रु. 12000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4839)*

★ **श्री कुशल चन्द जी जैन,** 577, स्कीम नं. 10, अलवर ने रु. 6000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4840)*

★ **श्री एस. कोठारी जी अनुज कोठारी,** बीच का मोहल्ला, अलवर ने रु. 12000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4841)*

★ **श्री अनिल कुमार जी जैन,** 533, स्कीम नं. 10, अलवर ने रु. 11000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4842)*

★ **श्रीमती उर्मिला जी जैन,** ए–57, नित्यानन्द नगर, क्वींस रोड, जयपुर ने अपने पति स्व. श्री कस्तूर चन्द जी जैन (मण्डावर वाले) की प्रथम पुण्यतिथि पर रु. 12000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4838)*

★ **श्री भारत भूषण जी जैन,** मकान नं. 4, अम्बेडकर सर्किल, अलवर ने रु. 12000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4843)*

★ **श्री जगदीश प्रसाद जी भागचन्द जी जैन,** 128, स्कीम नं. 4, अलवर ने अपने पूज्य पिताजी स्व. श्री विजय चन्द जी जैन (पटवारी नागल सहाड़ी वाले) की दिनांक 19.12.2020 को नवीं पुण्यतिथि के अवसर पर रु. 6000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4864)*

★ **इन्जिनियर श्री पदमचन्द जी जैन,** क्लासिक पालीवाल सिटी, मनीषपुरी के पास, इन्दौर (म.प्र.) ने अपनी सुपुत्री सौ.कां. उन्नति संग चि. चित्रांश के दिनांक 11.12.2020 को शुभ विवाहोपलक्ष पर रु. 12000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4285)*

★ **श्रीमती मंजू जी जैन** धर्मपत्नी इन्जिनियर श्री पदमचन्द जी जैन, क्लासिक पालीवाल सिटी, मनीषपुरी के पास, इन्दौर (म.प्र.) ने अपनी सुपुत्री सौ.कां. उन्नति संग चि. चित्रांश के दिनांक 11.12.2020 को शुभ विवाहोपलक्ष पर रु. 12000/– सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4286)*

## बधाई

**श्रीमती याचना जैन**

पत्नी श्री विपिन जैन, पुत्रवधु श्री पारस जैन, निवासी 61/26, रजत पथ, मानसरोवर, जयपुर ने एम.एन.आई.टी. से रसायन विज्ञान में पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त कर जैन समाज का नाम रोशन किया है। अ.भा.प. जैन महासभा श्रीमती याचना जैन के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए बधाई व शुभकामनाऐं प्रेषित करती है।

# शोक संवेदना

**श्री पंकज जैन** सुपुत्र स्व. श्री बालकिशन जी जैन, लड्डूघाटी, पहाड़गंज, नई दिल्ली का दिनांक 6.12.2020 को 48 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। श्री पंकज जी दिल्ली शाखा के सहमंत्री और आर.एस.एस. से जुड़े हुए थे। बीजेपी युवा मोर्चा के उपाध्यक्ष व पहाड़गंज समिति के अध्यक्ष भी थे। पंकज जी बाल्यकाल से ही अपने पितारी के साथ सामाजिक कार्यों में लगे रहते थे। वे एक सच्चे ईमानदार, कर्मठ समाज सेवक व देशभक्त थे। इनके स्वर्गवास से समाज को अपूरणीय क्षति हुई है। उनको भुलाया नहीं जा सकता।

**श्रीमती गुणमाला जी जैन** धर्मपत्नी श्री महेश चंद जैन सेनि. एपीपी (वैर वाले) का आकस्मिक स्वर्गवास दि.3.12.2020 को हो गया है। श्रीमती गुणमाला जी सरल स्वभाव की धार्मिक व मिलनसार महिला थीं।

**श्रीमती सरला जी जैन** (धर्मपत्नी स्व. श्री रविन्द्र जैन) एवं श्री राजीव जैन (पूर्व मंत्री पल्लीवाल जैन सभा दिल्ली) की माताजी निवासी 5186, बसंत रोड, पहाड़गंज, नई दिल्ली का आकस्मिक निधन दिनांक 24.11.2020 को हो गया है। श्रीमती सरला जी धार्मिक व मिलनसार महिला थीं।

**श्री चांदमल जी जैन,** निवासी वैशाली नगर, हरी मार्ग, जयपुर का स्वर्गवास दि. 3.12.20 को हो गया है। आप धार्मिक, मृदुभाषी व उच्च विचार वाले सरल स्वभावी व्यक्तित्व के धनी थे।

**श्री पदमचंद जी जैन** पुत्र स्व. श्री मूलचंद जैन, सेनि. कार्यालय अधीक्षक, कलेक्ट्रेट अजमेर का असामयिक निधन दिनांक 2.12.2020 हो गया है। आप धार्मिक, मृदुभाषी व उच्च विचार वाले सरल स्वभावी व्यक्तित्व के धनी थे।

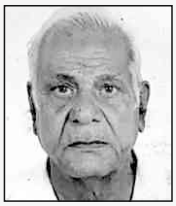

**श्री धर्मचंद जी जैन** (मुन्शी बाग वाले– पूर्व अध्यक्ष, श्री चंद्रप्रभ दिगंबर जैन मन्दिर मुन्शी बाजार, अलवर) पुत्र स्व. श्री पन्ना लाल जी का देवलोक गमन दिनांक 25.11.2020 को हो गया है। आप धार्मिक, मृदुभाषी व उच्च विचार वाले सरल स्वभाव वाले थे।

**श्री सुरेश चन्द जी जैन** (बक्सी) पुत्र स्व. श्री नवल किशोर जी जैन (हरसाना वाले) 21, महावीर नगर, पत्रकार कॉलोनी रोड, न्यू सांगानेर रोड, जयपुर का स्वर्गवास दि. 18.11.2020 हो गया है। सुरेश जी साहब मिलनसार, धर्मपरायण व्यक्तित्व के धनी थे।

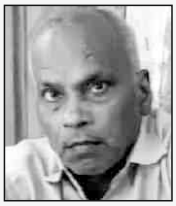

**श्री प्रकाश चन्द जी जैन,** मिढाकुर, आगरा का स्वर्गवास दि. 20.12.2020 हो गया है। आप धार्मिक, मृदुभाषी व उच्च विचार वाले सरल स्वभावी व्यक्तित्व के धनी थे।

**श्री शिव कुमार जी पालीवाल,** (मंडावर वाले) 93/55, अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर का स्वर्गवास दि. 25.11.2020 हो गया है। आप धार्मिक, मृदुभाषी व उच्च विचार वाले व्यक्तित्व के धनी थे।

**श्री कुशलचन्द जी जैन,** (रामगढ़, अलवर वाले) ए–68, स्कीम नं. 6, कुम्भा नगर, चित्तौड़गढ़ का स्वर्गवास दि. 24.11.2020 हो गया है। आप धार्मिक, मृदुभाषी व उच्च विचार वाले व्यक्तित्व के धनी थे।

**श्री स्वरूप चन्द जी जैन,** विवेकानन्द नगर, कोटा का स्वर्गवास हो गया है। आप कोटा शाखा के वरिष्ठ सदस्य थे। आप सरल स्वभावी, मिलनसार, धार्मिक व देव शास्त्र, गुरु के प्रति श्रद्धा रखते थे।

**अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा भगवान महावीर स्वामी से उपरोक्त आत्माओं की सद्गति की प्रार्थना करते हुए अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करती है।**

**QUALITY WORKS • PROMPT SERVICE • COMPETITIVE RATES**

**PRODUCTS :**
**Transmission Line Towers (HT&LT), Telecom Towers, Wind Mill Structures, Sub-Station Structures, Lattice Structures, RSJ Poles & GI Earthing Strips.**

**FULLY EQUIPPED ULTRA MODERN FABRICATION AND GALVANIZING PLANT WITH EOT CRANES, HOISTS, POWER TROLLEYS, TESTING LABS & ETP SYSTEM TO ENSURE GREEN ENVIRONMENT**

**Fabrication & Galvanizing done as per IS, BIS, ASTM, DIN & ISO Standards**
**Bath Size : 9m (L) x 0.8m (W) x 1.4m (D)**
**Plant Capacity : 18000 Tons / Year**

Vijay Transmission PVT. LTD.

# Vijay Transmission
## PVT. LTD.

**Plant :**
PNH No. 100, Village Kanhera, Block Dharsiva, Uria Acholi Marg, Dist. Raipur-492001
Tel.: (0771) 305 4900 • Fax : (0771) 232 3162

**Corporate Office :**
210, 211, 2nd Floor, Kamla Space, S.V. Road, Santacruz (West), Mumbai-400054
Tel.: 022-262183401 • Fax : +91-022-26609915
E-mail : info@vijaytransmission.com

## पत्रिका विज्ञापन सहयोग राशि

| | वार्षिक | मासिक |
|---|---|---|
| कवर पृष्ठ अंतिम ( मल्टीकलर ) | 31,000/- | |
| कवर पृष्ठ द्वितीय ( मल्टीकलर ) | 25,000/- | |
| कवर पृष्ठ तृतीय ( मल्टीकलर ) | 25,000/- | |
| कलर पृष्ठ ( मल्टीकलर ) | 21,000/- | 2,500/- |
| पुण्य स्मृति आधा पृष्ठ श्वेत श्याम | 10,000/- | 1,000/- |
| पुण्य स्मृति पूरा पृष्ठ श्वेत श्याम | 15,000/- | 1,500/- |

### पत्रिका सदस्यता

| | | |
|---|---|---|
| पत्रिका वार्षिक शुल्क | 50/- | 5/- |
| पत्रिका आजीवन सदस्य | 500/- | |
| पत्रिका संरक्षक सदस्य | 11,000/- | |
| पत्रिका हितैशी सदस्य | 5100/- | |

## सूचना

( अ ) रु. 500/- से कम के आर्थिक सहयोग राशि वालों के नाम पत्रिका में प्रकाशित नहीं किये जायेंगे।

( ब ) जो सदस्य अपनी पत्रिका कोरियर द्वारा प्राप्त करना चाहते हैं वह रु. 50/- प्रति माह के हिसाब से एक वर्ष का शुल्क रु. 600/- श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका को भेजें।

- *पत्रिका हेतु प्रकाशनार्थ सामग्री पत्रिका संयोजक/सम्पादक के पास ही प्रेषित करें, जो प्रत्येक माह की 15 तारीख तक प्राप्त होनी चाहिये।*
- *पत्रिका हेतु सदस्यता शुल्क/विशेष सहायता संयोजक के पास प्रेषित करें।*
- *पत्रिका में स्थान उपलब्ध होने पर ही विज्ञापन का प्रकाशन किया जायेगा।*
- *गत वर्ष के रंगीन विज्ञापनदाताओं की बकाया विज्ञापन सहयोग राशि शीघ्र संयोजक के पास भिजवाने का कष्ट करें।*

*आप पत्रिका की भुगतान राशि 'श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका' के नाम से या ऑनलाईन खाते में भी भेज सकते हैं, विवरण निम्न है :-*

**"SHRI PALLIWAL JAIN PATRIKA"**
Bank Name : **BANK OF BARODA** • Branch : **DURGAPURA, JAIPUR**
A/c No.: **38260100005783** • IFSC Code : **BARB0DURJAI**

*पत्रिका राशि ऑनलाईन जमा कराने के बाद संयोजक को सूचना देवें एवं ट्रांसफर राशि का स्क्रीन शॉट भी भेजें, इसके अभाव में जमा राशि का समायोजन किया जाना संभव नहीं होगा।*

*चन्द्रशेखर जैन, संयोजक पत्रिका*
*मो.: 9829134926*

---

*मान्यवर,*

*सभी साधर्मी बन्धुओं को सुचित किया जाता है कि अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा को विधवा सहायता एवं अन्य सहयोग प्रदान करने हेतु राशि चैक, नकद या ऑनलाईन महासभा के खाते में जमा करवाई जा सकती है, जिसका विवरण निम्न है :-*

**"AKHIL BHARTIYA PALLIWAL JAIN MAHASABHA"**
Bank Name : **STATE BANK OF INDIA** • Branch : **C-SCHEME, JAIPUR**
A/c No.: **51003656062** • IFSC Code : **SBIN0031361**

*राशि जमा कराने के पश्चात अर्थमंत्री को अवश्य सूचित करें, जिससे जमा की रसीद प्रेषित की जा सके।*

*अजीत कुमार जैन, अर्थमंत्री महासभा*
*मो.: 9413272178*

*In Loving Memory of*

## Late Sh. Shyamlal Ji Jain & Late Smt. Jaidevi Ji Jain

**Raj Kumar Jain - Sushila Jain**
*(Son & Daughter in Law)*
**Vikas Jain - Babita Jain**
**Vipin Jain - Ritu Jain**
*(Grand Son & Grand Daughter in Law)*
**Abhilasha Salecha - Nitin Salecha**
**Manisha Jain - Sanjeev Jain**
*(Grand Daughter & Grand Son in Law)*

# JAPAN KARATE-DO NOBUKAWA-HA SHITO-RYU KAI INDIA

## UNIT-RAJASTHAN

## LEARN

### KARATE CLASSES

1. Self Defence Course.
2. Black-Belt Training Programme.
3. Yoga Training For Karate Students.
4. Organise District, State, National, International Championships & Training Programme.

### FRENCH CLASSES

1. Prepare For Basic French Language.
2. Prepare For Delf Exam. (Conduct by Allaince De Français)

**CONTACT :**

*Vipin Jain*
3rd Dan Black Belt
Chief Karate Instructor of Rajasthan & West India Coordinator
9829180895
www.karatedorajasthan.com

Firm :

## Jain Packing Materials

(Traders of Packing Materials & Machines)
46, Royal Complex, Medical Market, Near Railway Station, Ajmer (Raj.)
**Residential Address :**
464, "Shyam Sadan", Near Palliwal Digamber Jain Temple, Pal Bichla, Ajmer

# भावभीनी श्रद्धांजलि

**स्व. श्री अमर चन्द्र जी जैन**
( 04.01.1931 - 31.05.2009 )

**स्व. श्रीमती अंगूरी देवी जी जैन**
( 02.10.1933 - 20.12.1982 )

*आपका स्नेह, सद्व्यवहार, सेवा भावना एवं प्रेरणादायक चरित्र हमारा सदैव मार्गदर्शन करता रहेगा एवं हम सभी आपको शत्-शत् नमन करते हुये सजल नेत्रों से श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।*

**श्रद्धावनत**

*पुत्र-पुत्रवधु :*
शिखर चन्द जैन
विनय कुमार जैन ''नेताजी''
जिनेन्द्र जैन-पूनम जैन
यतीन्द्र जैन-निर्मला जैन
मनोज जैन-कमलेश जैन

*प्रपौत्र, प्रपौत्री :*
आर्जव, वर्णित, दिविज, दिव्यांश, निवांश, प्रियल, निवृति, कृति

*नवासा, नवासी :*
ऋषि, रितेश, तन्मय, सम्भव, कपिश, अनन्त, सुहांशी

*पौत्र-पौत्रवधु :*
संदेश जैन-अंशु जैन
आदेश जैन-रश्मि जैन
अनुज जैन-पिंकी जैन
रोहित जैन-पारूल जैन
निर्देश जैन-श्वेता जैन
मोहित जैन, प्रखर जैन

*पुत्री-दामाद :*
स्नेहलता जैन-द्वारिका प्रसाद जैन

*पौत्री-दामाद :*
कामिनी-नितिन
शिल्पी-अमित
डिम्पल-चितेन्द्र
अर्पिता-अभिमन्यु

*धेवती-दामाद :*
रितु-कुशल जैन- आकृति, रितिक
राखी-उमेश जैन- अर्षिका, अर्विका

*प्रतिष्ठान :-*
शिखर चन्द्र जैन कमीशन एजेन्ट, आगरा (मो. 9319118999)
अरिहन्त बुक एजेन्सी, आगरा (मो. 9319118999, 9319773244)
प्रखर ट्यूर्स एण्ड ट्रेवल्स प्रा.लि., नई दिल्ली (मो. 9810009822)
ट्रेवल्स वायजर्स, नई दिल्ली (मो. 9810007822)
कंप्यूटर किंग, जयपुर (मो. 9720119962)
कंप्यूटर क्लाउड, जयपुर (मो. 9358989962)

*समस्त जनुथरिया परिवार, ग्राम मुड़ियापुरा, तहसील-किरावली, जिला-आगरा वाले*

# वैवाहिकी

## सूचना

1. पत्रिका में प्रकाशित वर/वधू की तलाश के अंतर्गत विवरण की सत्यता से सम्पादक अथवा पत्रिका का किसी भी प्रकार का दायित्व नहीं हैं। वर/वधू दोनों पक्ष पूर्ण जानकारी अपने स्तर से करने के बाद ही संबंध स्थापित करें।
2. पात्रों के विवरण में आयु के स्थान पर जन्मतिथि तथा आय चार/पांच अंको में, के स्थान पर वास्तविक आय लिखें।

*नोट : प्रकाशन योग्य सामग्री एवं संबंध होने की सूचना पत्रिका संयोजक को प्रषित करें जिससे आगामी अंक में विज्ञापन का प्रकाशन किया जाये या न किया जाये।*

## वर की तलाश

★ **प्रगति जैन** (मांगलिक) पुत्री श्री सुशील कुमार जैन, जन्मतिथि 26 मार्च 1994 (5:36 बजे), कद 5 फीट, शिक्षा– बी.टेक., कम्प्यूटर साईन्स, जे.ई.सी.आर.सी. जयपुर, जॉब– आफिसर स्केल–1, बैंक आफॅ बड़ौदा, गौत्र : स्वयं– राजोरिया, मामा– बहेतरिया, सम्पर्क : 119/69, अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर, मोबाईल : 9829671599, व्हाट्सएप : 8233091599 *(अक्टूबर)*

★ **मिल्की जैन** सुपुत्री श्री पारस चंद्र जैन, जन्मतिथि 15.04.1993 (सायं 7:35), कद 5'–3'', शिक्षा– एम.बी.ए., गोत्र : स्वयं– बंजारा, मामा– डंगया, सम्पर्क : 1178 बी–ब्लॉक, आनंद नगर, ग्वालियर, मो.: 9425128745, 9425772444 *(दिसम्बर)*

★ **Priyanka Jain** D/o Sh. Lokesh Kumar Jain, DoB 28.05.1996 (at 10:00 am, Alwar), Height- 155 cm., Education- MBA, Gotra : Self- Chaudbambar, Mama-Kotiya, Contact : Sh. Lokesh Kumar Jain, Jain Petrol Pump, Laxmangarh, Dist. Alwar, Mob.: 9414812360, 9887354080, Email : nitesh19jain@gmail.com *(Oct.)*

★ **Bhawna Jain** D/o Sh. Mukesh Kumar Jain, DoB 24.09.1993 (at 6:05 am, Bharatpur), Height- 5'-3.5:, Education- Chartered Accountant, Service- CITI Bank, Mumbai , Gotra : Self- Kotiya, Mama-Gindodia, Contact : Q.No. RE/Type-III/1141, Railway Colony, Kota Junction *(Oct.)*

★ **Shweta Jain** (Manglik) D/o Sh. Prakash Chand Jain, DoB 25.06.1993 (at 10:30 am, Kherli), Height 5'-4", Education- M.A. (Geography) & B.Ed., Gotra : Self-Kotiya, Mama- Rajoriya, Contact : Jain Colony, Ward No. 2, Kherli, Alwar, Mob.: 8058986363, 8171662074 *(Oct.)*

★ **Amisha Jain** D/o Sh. Ajay Kumar Jain, DoB 31.12.1995 (at 6:15 pm, Agra), Height 5'-2", Education- MBA (Finance) from DEI, Agra, Occupation- Working as Deputy Manager in Bank of Maharashtra (Govt.) Mumbai, Gotra : Self- Baroliya, Mama-Behteriya, Contact : 2, Mahendra Enclave, Nehru Nagar, Agra, Mob.: 9412158607 *(Oct.)*

★ **Srishti Jain** D/o Sh. Sudhir Kumar Jain, DoB 26.06.1991 (at 8:15pm, Aligarh,, U.P.), Height 5'-2", Wheatish Fair Slim, Education- B.Sc., B.Ed. (TET Cleared), Teacher Pvt. School, Rs. 10,000/- P.M., Gotra : Self-Jevaria, Mama- Gangerwal, Contact : 35, Jain Street, Palki Khana, Aligarh-202001 (U.P.), Mob.: 8126067350, 9460023151, Email : jain.sajan@yahoo.co.in *(Oct.)*

★ **Yukta Jain** (Manglik) D/o Sh. Satyendra Kumar Jain, DoB 16.11.1993 (at 9:35 am, Agra), Height- 5ft., Education- M.Com., B.Ed., Profession- Teacher, Gotra :Self- Chaurbambar, Mama- Kotiya, Contact : H.No. 9, Vishv Karma Vatika, Shahganj Road, Bodla, Agra-282007, Mob.: 7520615933, 9410857876 *(Oct.)*

★ **Rachna Jain** (Manglik) D/o Sh. Virender Jain, DoB 19.09.1993 (at 9:30 am, Gangapur), Height- 5'-4", Education- B.Tech, Occupation- Software Developer, Ciena ,Gurgaon, Gotra : Self- Barolia, Mama- Choudhary, Contact : 2355, Air Force Road, NIT Faridabad, Haryana, Mob.: 9582262622, 9953180616, Email : rachna.jain2355@gmail.com *(Oct.)*

★ **Pratibha Jain** D/o Sh. Pradeep Kumar Jain, DoB 11.10.1995 (at 3:25 am, Jaipur), Height- 5'-5", Education- B.Tech, Occupation- Electro Technical Officer in Maersk Line Shipping Corporation, Gotra : Self- Kotia, Mama- Bayaniya, Contact : 35/124, Rajat Path, Mansarovar, Jaipur, Mob.: 9414386658, 7976290847, 0141-2394873, 9460723972 *(Oct.)*

★ **Neha Jain** D/o Sh. Nirmal Kumar Jain, DoB 10.10.1994 (at 04:15 am, Abu Road), Education-B.Tech.(EC), M.Tech. (persuing), Gotra : Self-Januthariya, Mama- Ved Vairashtak, Contact : 274, Gandhi Nagar, Abu Road (Raj.), Mob.: 9929303643, 9413847566 *(Nov.)*

★ **Neha Jain** (Manglik) D/o Sh. Manoj Kumar Jain, DoB 24.05.1994 (at 06:55 am, Laxmangarh, Alwar), Height- 5ft., Fair Complexion, Education- B.Tech (CSE), Jyoti Vidyapeeth Womens University, Jaipur, Professional Info Designation- Deputy Manager at Reliance Jio, Gotra : Self- Chaurbambar, Mama-Athvarsiya, Contact : Near Jain Temple, Main Market Road, Laxmangarh, Alwar, Mob.: 9414906441 *(Nov.)*

★ **Deeksha Jain** D/o Sh. Rakesh Kumar Jain, DoB 07.08.1993 (at 10:15 am, Agra), Height- 5'-4", Education- B.Com., M.B.A., Job- Analyst in E.Y. Noida, Income- 5 LPa, Gotra : Self- Badaria, Mama-Chorbambar, Contact : 325, Jaipur House, Agra-02, Mob.: 9997039641, Ph.: 0562-4031148 *(Nov.)*

★ **Ananta Jain** D/o Sh. Suresh Chand Jain, DoB 23.09.1991 (at 4:25am, Agra), Height- 5'-6", Education- B.Tech in ME from BIET Jhansi & M.Tech in ME from IIT Jodhpur, Gotra : Self- Salavadiya, Mama- Khair, Contact : 181-A, Second Floor, Panchvati Parsvnath, Fatehabad Road, Agra, Mob.: 9549995511, Email : jainanant@indianoil.in *(Nov.)*

★ **Shaina Jain** (Maanglik) (Divorcee) D/o Sh. Shital Prasad Jain, DoB 11.03.1992 (at 6:22 am, Alwar), Height 5'-4", Education- BBA, MBA, PGDCA, Job- Working at HDFC Bank, New Delhi, Gotra : Sangarwasia, Contact : Raj Nagar Part-2, Palam Colony, New Delhi, Mob.: 9354830171, 9560649574, 9899076686 *(Dec.)*

★ **Sonakshi Jain** D/o Sh. Yogesh Kumar Jain, DoB 27.03.1993 (at 07:04 AM, Agra), Height- 5'-4", Education- B.Tech. in Electrical and Electronics from Shiv Nadar University and MBA in Finance from USMS, Currently Working with Tata Power Delhi Distribution Limited as an Asst. Manager, Package 9.3 LPA, Gotra : Self- Baderia, Mama- Chaudhhary, Contact : 7060928794, 9634081372 *(Dec.)*

★ **Nitasha Jain** D/o Sh. Rajesh Kumar Jain, DoB 05.07.1993 (at 01:45 AM, Shivpuri), Height- 5'-4", Education- B.Com., MBA, Currently Working at Tata Consultancy Services as Process Enabler, Gotra : Rajoriya, Contact : 9425765937, 9993978225, 9926689177, 8823882162 *(Dec.)*

★ **Akansha Jain** D/o Sh. Sunil Kumar Jain, DoB 16.11.1991 (at 2:57 pm, Agra), Height 5'-1", Education- B.Com., C.A. (Inter), CAIIB, Occupation- Asstt. Manager in Union Bank, Mumbai, Gotra : Self- Athavarsiya, Mama- Baderiya, Probelem- Thalassmia, Contact : B-408, Harshvardhan Aptt. Raheja Township Malad (E), Mumbai, Mob.: 9867778868, 7039681603 *(Dec.)*

★ **Kavya Jain** D/o Late Sh. Harish Chand Jain, DoB 16.03.1995 (at 11:45 AM, Agra), Height- 5ft., Education- B.Sc. & M.Sc. (Math), Gotra : Self- Rajoriya, Mama- Birtdriya, Contact : Sh. Yatendra Jain (Brother), 56, Ramjeet Nagar, Albatiya Road, Shahganj, Agra, Mob.: 7017625374 *(Dec.)*

★ **CA Parul Jain** D/o Sh. Mahaveer Jain, DoB 26.09.1995 (at 1:14 AM, Mandawar), Height- 5'-2", Education- B.Com, M.Com (Gold Medalist), CA, NET Qualified, Gotra : Self- Chauebambar, Mama- Ambia, Contact : Sh. Mahaveer Jain, 10, Bodan Colony, Jaipur Road, Alwar, Mob.: 8094509540, Email ca.parul26@gmail.com *(Dec.)*

## वधू की तलाश

***कृपया दहेज लोभी पत्रिका में प्रकाशनार्थ विज्ञापन न भेजें***

★ **सत्यम जैन** पुत्र श्री भोला पंसारी, कद– 5'–5'', शिक्षा– बी.बी.ए., एम.बी.ए., व्यवसाय– होलसेल एवं रिटेल मेडिकल स्टोर भोपाल, आय– 12 लाख लगभग, गोत्र : स्वयं– नंगेसुरिया, मामा– डंगया, सम्पर्क : भोला पंसारी, जौरा, जिला मुरैना, मो.: 9425757414 *(अक्टूबर)*

★ **अंकुश जैन** पुत्र श्री अजीत कुमार जैन, जन्मतिथि 26 जून 1994 (प्रातः 3:07 बजे), कद– 5'–5'', शिक्षा– बी.टेक (मैकेनिकल), जॉब– कैशियर (सेन्ट्रल बैंक ऑफ इन्डिया), गोत्र : स्वयं– लैदोडिया, मामा– बडवासिया, सम्पर्क: जैन कॉलोनी, खेरली, अलवर, मो.: 9461247544, 9887787705 *(नवम्बर)*

★ **मोहित जैन** पुत्र श्री नरेंद्र कुमार जैन, जन्मतिथि 16.12.1992 (प्रातः 07:40 बजे, रावतभाटा, कोटा), शिक्षा–बी.टेक., एम.बी.ए. (फाइनेन्स), कार्यरत– जेनपेक्ट जयपुर, गोत्र : स्वयं– आमेश्वरी, मामा– माईमुण्डा, सम्पर्क : 9352243036, 9414668603 *(दिसम्बर)*

★ **प्रखर जैन** (मांगलिक) सुपुत्र श्री मनोज कुमार जैन, जन्मतिथि 19.02.1994 (प्रातः 00:35), कद 5'–8'', शिक्षा– बी.बी.ए., एम.बी.ए. मार्केटिंग, व्यवसाय– ट्रवलिंग एण्ड ट्यूर्स, आय– 15 लाख प्रति वर्ष, गोत्र : स्वयं– जनुथरिया, मामा– मालेश्वरी, सम्पर्क : डी–127, फर्स्ट फ्लोर, झिलमिल कॉलोनी, नई दिल्ली, मो.: 9810009822, 9910009822, ईमेल : prakhar@travelvoyagers.com *(दिसम्बर)*

★ **Deepak Jain** S/o Sh. Jinesh Jain, DoB 01.05.1986 (at 11:30 PM, Rohtak), Height- 5'-8", Education- MBA (Retail Management), Working in Future Retail Ltd. as Warehouse Manager (SCM) at Sec. 18, Noida, CTC Rs. 6 LPA, Gotra : Self- Goel, Mama- Garg, Contact : Khasra No. 871, B Block, Gali No. 24, Phase 1, Road No. 6, Near Khatu Shyam Mandir, Shyam Vihar, New Delhi-110043, Mob.: 9210724883, 9268447220 *(Oct.)*

★ **Keshav Jain** S/o Sh. Tara Chand Jain, DoB 12.04.1992 (at Laxmangarh), Height- 5'-8", Education- M.Sc. (Environment Science), Working as Area Business Manager in Pharmaceutical Co., Gotra : Self- Choudhary, Mama- Baderiya, Contact : Jain Juice Centre, Indira Market, Laxmangarh (Alwar), Mob.: 9887299309, 8504999625, Email : keshavjain2@gmail.com *(Oct.)*

★ **Rohit Jain** S/o Late Sh. Pramod Kumar Jain, DoB 28.05.1994 (at 11:50 pm, Laxmangarh Alwar), Height- 172 cm., Education- B.Tech., Job- Software Engineer, Jaipur, Gotra : Self- Chaudbambar, Mama- Dhati, Contact : Sh. Lokesh Kumar Jain (Tauji), Jain Petrol Pump, Laxmangarh, Dist. Alwar, Mob.: 9414812360, 6350160386, Email : rohit1994@gmail.com *(Oct.)*

★ **Nilesh Jain** S/o Sh. Rajendra Kumar Jain DoB 30.06.1985 (at1:22 pm, Ajmer), Height 5'-8", Education- M.Com, MBA, Occupation- Working as a

State Head at Manba Finance Ltd. Co. Jaipur, Income 10.50 LPA, Gotra : Self- Maimunda, Mama- Chorbambar, Contact : 11/40, Kaveri Path, Mansarover, Jaipur, Mob.: 9829818894, 9983444198 *(Oct.)*

★ **Kshitij Jain** S/o Sh. Satish Chand Jain, DoB 25.10.1989 (at 06:45 am, Delhi), Height 5'-11", Education- MCA, Working in an IT MNC, Noida, Salary- Rs. 11 LPA, Gotra : Self- Vairashtak, Mama- Januthariya, Contact : Flat No. 612, Tower C, Gaur Sports Wood, Sector 79, Noida, Mob.: 9871981382, 9650334767, Email : sjainchand@gmail.com *(Oct.)*

★ **Prateek Jain** S/o Sh. Mukesh Kumar Jain, DoB 29.08.1991 (at 6:30 pm, Bharatpur), Height- 5'-7", Education- B.Tech., Government Service- Baroda Rajasthan Khsetriya Gramin Bank, Kota, Gotra : Self- Kotiya, Mama- Gindodia, Contact : Q.No. RE/Type-III/1141, Railway Colony, Kota Junction *(Oct.)*

★ **Prince Kumar Jain** (Anshik Manglik) S/o Sh. Yogesh Chand Jain, DoB 02.03.1989, Height 5'-8", Education- MBA, Working as Assistant Manager in AU Small Finance Bank, Package 4 LPA, Gotra : Self- Bayaniya, Mama- Maimunda, Contact : C-326, Surya Nagar, Alwar, Mob.: 9414857271 *(Oct.)*

★ **Ankit Palliwal** S/o Sh. Nirmal Jain, DoB 06.11.1988, Height 5'-10", Education- M.Sc in applied Geographic Information System from National University of Singapore, M.Sc in Economics from Indian Institute of Technology Kanpur, Occupation- Manager, Central Office Union Bank of India, Mumbai, Gotra : Self- Ledoriya, Mama- Kotiya, Contact :105/ 119, Vijay Path, Mansarovar, Jaipur, Mob.: 8696924329, 9532033922, Email : jain.kr.nirmal@gmail.com *(Oct.)*

★ **Rohit Kumar Jain** S/o Sh. Gyanchand Jain, DoB 28.11.1994 (at 7:00 am, Bharatpur), Height 5'-7", Education- B.Tech (E.C.E), Working as Application Development Analyst in Accenture, Pune, Income 6 LPA, Gotra : Self- Khair, Mama- Salawadia, Contat : 9460737358, 7976360536, 9896009921, Email : rohitsonu33@gmail.com *(Oct.)*

★ **Shubham Jain** (Manglik) S/o Sh. Dinesh Chand Jain, DoB 22.07.1993 (at 8:58 am, Bharatpur), Height 5'-8", Education- B.Tech (Electrical and Electronic Engineering from NIT Trichy), Occupation- Senior Data Scientist in Course5 Intelligence at Bangalore, Income 19 LPA, Gotra : Self- Kashmeriya, Mama- Baderiya, Conatct : 6-L-3, Mahaveer Nagar Extension, Kota- 324009, Mob.: 9414677093, 9785018193, Email : jainshubh2207@gmail.com *(Oct.)*

★ **Karan Jain** S/o Sh. Tilak Jain, DoB 24.01.1994 (at 7:58 pm, Alwar), B.Com., Post Graduation in Banking & Finance, Job-Relationship Manager in ICICI Bank, Alwar, Income 5.6 LPA, Gotra : Self- Maimuda, Mama- Kaloniya, Contact : 316, Arya Nagar, Alwar, Mob.: 9414367669, 7726884348 *(Oct.)*

★ **Manish Jain** S/o Sh. Diwan Kapoor Chand Jain, DoB 09.05.1988 (at 01:10 pm, Alwar), Height 5'-6", Education- B.Tech (ECE) from NIT Jaipur, Gold Medlist, Presently Working as Sr. Lead UI/UX Associate at Noida, Package- 32.5 LPA (Fixed Component), Gotra : Self- Amiya, Mama- Chaudhary, Contact : Diwan ji ki Haweli, Baderia Padi, In front of Saint Niwas, Alwar, Mob.: 9529220424, 7303079218, 9783565383, Email : manish9may@gmail.com *(Oct.)*

★ **Agam Jain** S/o Sh. Pramod Kumar Jain, DoB 15.03.1992 (at 6:15 PM, Alwar), Height- 5'-10", Education- B.Sc. (University of Delhi), MS(IT) (VIT, Vellore), Occupation- Software Engineer in Salesforce (Hyderabad), Salary- 20+ LPA, Gotra : Self- Chaurbambar, Mama- Salawadia, Contact : Faridabad, Haryana, Mob.: 9911499282 *(Oct.)*

★ **Aditya Jain** S/o Sh. Kailash Kumar Jain, DoB 02.01.1992, Height- 5'-9", Education- B.Com. (H) from Delhi University, Profession- Finance Associate in Genpact (MNC), Income- 4 LPA, Gotra : Vairashtak, Contact : Flat No. 325, Paradise Apartment, Plot No.1, Sector-9, Dwarka, New Delhi-110077, Mob.: 9910889353 , Email : jain36317 *(Oct.)*

★ **Siddharth Jain** S/o Sh. Surendra Kumar Jain, DoB 05.04.1993 (at 2:20 am,Aligarh), Height- 5'-9", Education- B.Tech. (Electronics & Tele-comminucation), Occupation- Consultant at Capgemini India Pvt. Ltd., Bangalore, Package- 11 LPA, Gotra : Self- Saketia, Mama- Kathotia, Cotact : B-4, First Floor, Arihant Apartment, Khirni Gate, Police Chowki, Near Jain Mandir, Aligarh., Mob.: 9411466838, 8433217092, Email : 05siddharthjain @gmail.com *(Oct.)*

★ **Abhay Jain** (Manglik) S/o Sh. Prakash Chandra Jain, DoB 20.11.1993 (at 7:25 am), Height- 5'-11", Education- B.Tech (Electronics & Communication) (Hons.), Working in KPMG, Bangalore as Data Scientist, CTC 9 Lakhs, Gotra : Self- Chorbhamar, Mama- Behtariya, Contact : Meera Kunj, Mandawara Road, Jain Colony, Hindaun City, Mob.: 9024320476, 9667810819 *(Oct.)*

★ **Jitendra Jain** S/o Late Sh. Mahesh Chandra Jain, DoB 02.10.1989 (at 09:20 am), Height- 5'-6", Education- BCA, MCA, B.Ed., Job- Software Developer (Working in Noida), Salary- 40,000 p.m., Gotra : Chorambaar, Mama- Rajoriya, Contact : 56, Ram Jeet Nagar, Albatiya Road, Shahganj, Agra, Mob.: 9719036463, 9458815424 *(Oct.)*

★ **Rohit Kumar Jain** S/o Sh. Ashok Kumar Jain, DoB 27.02.1990 (at 6:45 am, Agra), Height- 5'-4", Education- Dip. in G.N.M. JWB, District Hospital at Agra, Gotra : Self- Salabadiya, Mama- Chorbambar, Contact : 51/213-A, Dashrath Kunj, Arjun Nagar, Agra-282001, Mob.: 9410204255, 9457386486 *(Oct.)*

★ **Rahul Jain** S/o Sh. Roop Chand Jain, DoB 05.05.1993 (at 8:15 am, Agra), Height- 5'-8", Fair

Complexion, Education- MBA, M.Com, Occupation- Deputy Sales Manager (Tata Capital Financial Services Ltd., Agra), Gotra : Self- Kotiya, Mama- Khair, Contact : 5E/18, Ashok Vihar, 100 Feet Road, Sahaganj, Mob.: 9358685310, Email : rjain7137@gmail.com *(Oct.)*

★ **Sumit Jain** S/o Sh. Lochan Das Jain, DoB 05.06.1991 (at 7:30 pm, Morena), Height 5'-9", Education- BE (Mech.) from IET (Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore), Occupation- Auditor in Ministry of Defence (Finance), Package 7 LPA, Gotra : Self- Baribar, Mama- Kashmiria, Contact : Near K.S. Mill Nainagarh Road Morena (M.P), Mob.: 8463022852, 9755284934 *(Nov.)*

★ **Shashank Jain** (Mangalik) S/o Sh. Anil Kumar Jain Bajaj, DoB 21.021992 (at 6:30 am, Agra), Height- 5'-7", Education- MCA, Job- Working in Iskpro Ltd. Noida as a Senior Software Tester, Gotra : Self- Ladodiya, Mama- Rajeshwari, Contact : C-153, Subhash Nagar, Kamla Nagar, Agra-282005, Mob.: 9634074088, 9927463181, Email : aniljainbajaj@gmail.com *(Nov.)*

★ **Abhinav Jain** S/o Sh. Vijay Kumar Jain, DoB 22.12.1994 (at 7:53 am, Agra), Education- B.Sc., Job- Assistant Manager in Aryavart Bank, Height- 5'-6", Gotra : Self- Salavadia, Mama- Kotia, Contact : Balaji Puram, Shahganj, Agra (U.P.), Mob.: 9319213080 *(Nov.)*

★ **Ayush Jain** S/o Dr. S.C. Jain, DoB 04.01.1993 (at 10:25 pm, Delhi), Height 5'-9", Education- B.E. (ECE), ITM Gurgaon University, Job- Telecom Engineer, Orange Business Services Gurugram, Income- 7.5 LPA, Gotra : Self- Sangeswari, Mama- Kotia, Contact : 1188, Sec. 15, Part 2, Gurgaon, Mob.: 9810180183, 8826267521 *(Nov.)*

★ **Vivek Jain** S/o Sh. Mahavir Prasad Jain, DoB 22.08.1992 (8:00AM, Joura), Height- 5'-8", Education- M.Tech (IIT Kharagpur), Job- Govt. Engg. in National Fertilizers Limited (Ramagundam), Income- 12 LPA, Gotra : Self- Mahila, Mama- Lohekadere, Contact : 9179536566, 6239737587 *(Nov.)*

★ **Aditya Jain** S/o Sh. Uttam Jain, DoB 12.10.1990 (at 11:20 pm, Alwar), Height- 5'-6", Education- B.Tech (ECE), M.Tech. (Pursuing from BITS Pilani), Occupation- Senior Software Engineer Accenture - Gurgaon, Package 10 LPA, Gotra : Self- Kashmeria, Mama- Choudhary, Contact : Janakpuri-II, Imli Phatak, Jaipur, Mob.: 9414405532 *(Nov.)*

★ **Anirudh Jain** S/o Sh. Sanjay Kumar Jain, DoB 08.01.1995 (at 5:38 PM), Height 5'-8", Education- BA, LLB, CS, Business- Director at S.K. Law and Company, Vishwakarma Complex, Agra (UP), Gotra : Self- Barbasiya, Mama- Varivar, Contact : 96, Jain Nagar Khera, Firozabad, Mob.: 9412265526, 9756600526, Email : anirudh.sklaw@gmail.com *(Nov.)*

★ **Abhinav Jain** S/o Sh. Abhinandan Jain, DoB 24.02.1993 (at 11:53 pm, Alwar), Height 5'-9", Education- B.Com. (Rajasthan University), Accounting Software- Tally & Busy, Preparing for Govt. Examination, Job Profile: Marketing Supervisor at Deepak India Pvt. Ltd., MIA Alwar, Gotra : Self- Ameshwari, Mama- Salavdiya, Contact : Opp. Geeta Press, Shikari Para, Munshi Bazar, Alwar, Mob.: 9414811460, 9079625770 *(Nov.)*

★ **Mehul Jain** S/o Sh. Ashok Jain, DoB 31.07.1995 (at Jaipur), Education- B.Tech (Computer Science) SRM University Chennai, Occupation- System Engineer at Infrrd, Bengaluru, Gotra : Maimuda, Contact : 658, Mahaveer Nagar-I, Landmark Pooja Tower, Gopalpura Bypass, Jaipur, Mob.: 9928070403 *(Nov.)*

★ **Rohit Jain** S/o Sh.Gyanchand Jain, DoB 28.11.1994 (at 7:00 am, Bharatpur),Height- 5'-6", Fair Complexion, Education- B.Tech (NIT Kurukshetra), Job- Software Engineer (Accenture), Gotra : Self- Khair, Mama- Salawadia, Contact : K.C. Sharma Gali, Near Pratap Sarpanch, Neem Da Gate, Bharatpur-321001, Mob.: 9460737358, 9896009921, Email : rohitsonu33@gmail.com *(Nov.)*

★ **Rahul Jain** S/o Late Sh. Daya Chand Jain (Fateh Chand Jain), DoB 11.07.1993 (at 07:25 am, Harsana- Laxmangarh, Alwar), Height- 5'-11", Education- M.Com, CA (Final), MBA (Pursuing), Occupation- Office Assistant at Rajasthan Marudhara Gramin Bank, Gotra : Self- Kotiya, Mama- Bhordhangiya, Contact : 5/52, N.E.B Housing Board, Behind Krishi Upaj Mandi, Alwar, Mob.: 9414334467, 9875114063, Email : rtmjain@gmail.com *(Nov.)*

★ **Rishabh Jain** S/o Sh. Arun Jain, DoB 17.11.1993 (at Jodhpur), Height 5'-7.2", Education- Engineering (Auto) SRM University, Chennai, MBA, Job- posted at Kolkata, Reckitt Benckiser (Hygiene Division), Gotra : Self- Kala, Mama- Patni, Contact : C-402, Dew Drops Society, Sector 47, Gurgaon-122001, Mob.: 8527066555, Email : arunuday33@gmail.com *(Nov.)*

★ **Kushal Jain** S/o Sh. Vinod Kumar Jain, DoB 23.12.1991 (at 7:50 am), Height 5'-8", Education- B.Tech in Information Technology (Hindustan Institute of Technology & Management), Agra, Job- Lead Assistant Manager at EXL Service Pvt Ltd., Oxygen Park, Sector 144, Noida, Gotra : Self- Kotia, Mama- Garg, Contact : 29, Prem Anand Kunj, Brij Bihar Colony, Kamla Nagar, Agra, Mob.: 9897717596, 6395524546, 9528032733, Email : vinodkumarjainagra@gmail.com, kushal.jain63@gmail.com *(Nov.)*

★ **Shrayansh Jain** S/o Late Sh. Sunil Jain, DoB 06.01.1994 (at 11:15 am, Kherli Ganj, Distt. Alwar), Education- Bachelor in Computers Application, Occupation- Junior Assistant Board of Revenue Raj. Ajmer, Gotra : Self- Nagaswaria, Mama- Chodbambar, Contact : Sunil Jain, Kiran Villa, Near Mathur Bhatta, Topdara, Ajmer.(Raj.), Mob.:

9413781308 (Sushil Jain), 9460355313 (Satish Jain) *(Nov.)*

★ **Shiv Jain** S/o Late Sh. Tota Ram Jain, DoB 06.07.1993 (at 12:35 am, Joura), Height 5'-5", Education 10th, Occupation- Shiv Iron Store (Manufacturing), Income 5 to 7 LPA, Gotra : Mahila, Mob.: 7509684399, 8652006887, 7000711623 *(Nov.)*

★ **Sparsh Jain**, DoB 16.08.1991 (at 4:30pm, Kherli), Height- 5'-4", Education- M.Com & Company Secretary, Job- Company Secretary & Compliance Officer working in M/s. Dhabriya Polywood Ltd., Malviya Industrial Area, Jaipur, Gotra : Self- Kotiya, Mama- Dhati, Contact : S.K. Jain, B-48, Vidhya Nagar, Jagatpura, Jaipur, Mob.: 96602 55730, 78773 26965 *(Dec.)*

★ **Prayansh Jain** S/o Sh. Prakash Chand Jain, DoB 27.02.1994 (at 8:10 PM, Alwar), Height- 5'-8", Education- B.Tech (JECRC Jaipur), Occupation- Software Engineer in Infosys Ltd., Chandigarh, Package- 4.5 LPA, Gotra : Self- Nageshwaria, Mama- Badwasia, Contact : Sh. Prakash Chand Jain, Jain Tyres, 9, Bapu Bazar, Alwar, Mob.: 9829215414 *(Dec.)*

★ **Kapil Kumar Jain** (Sonu) S/o Sh. Dinesh Chand Jain, DoB 12.12.1993 (at 11:30 am, Jaipur), Height- 5'-5", Education- Polytechnic Diploma (Mechanical Engineering + Graduate in B. A and Computer Diploma), Occupation- Working in Hevalls India Pvt. Ltd. in Alwar, Income 2.40 LPA, Gotra : Self- Kher, Mama- Nangesariya, Contact : 245, Shiv Colony, Mehandipur Balaji (Dausa), Mob.: 8955011011, 9829428416, 9784761984 *(Dec.)*

★ **Abhiyank Jain** S/o Sh. Rajesh Jain, DoB 14.11.1989, Height- 5'-8", Education- RedHat Certified System Engineer and Administratior, Cisco Certified Network Associate (USA), Occupation- Working as Technical Support Engineer at Motisons Jewellers, Jaipur, Income- 4 LPA, Gotra : Self- Ledoriya, Mama- Chandpuriya, Contact : Sh. Swaroop Chand Jain, 962, Kissan Marg, Barkat Nagar, Tonk Phatak, Jaipur, Mob.: 9351537837 (Rajesh Jain) *(Dec.)*

★ **Alankrit Jain** S/o Sh. Jagdish Prasad Jain, DoB 04.08.1990 (at 03:12 PM, Agra), Height 5'-11", Education B.Com., Occupation- Own Business (Trading of Imported Tin Plate Sheets & Manufacturing of Tin Factory Product), Income- 8 to 10 LPA, Gotra : Self- Salavadia, Mama- Deveriya, Contact : J.P. Jain, F-823/6, Kamla Nagar, AGRA, Mob.: 9412261738, Email : atc1987@rediffmail.com *(Dec.)*

★ **Mohit Jain** S/o Sh. N.K. Jain, DoB 16.12.1992 (at 7.40 AM, Rawatbhata), Education- B.Tech., MBA (Finance), Working- Process Developer Genpact IT Company, Jaipur, Gotra : Self- Ameshwari, Mama- Mymunda, Contact : N.K. Jain, Mob.: 9414668603 *(Dec.)*

★ **Siddharth Jain** S/o Sh. Babu Lal Jain, DoB 24.05.1992 (at 08:00 PM, Agra), Height- 5'-7", Education- B.Tech from Ramswaroop College, Lucknow, Job- Officer in Canara Bank, Gandhinagar, Gujarat, Gotra :Self- Kotiya, Mama- Deveriya, Contact : 13, Indra Colony, Shahganj, Agra-282010, Mob.: 9897848561 *(Dec.)*

★ **Mohit Jain** S/o Sh. Anoop Chand Jain, DoB 20.06.1986 (at Agra), Height- 6Ft., Education- M.Com., MBA, Profession- Business (Oil Mill Machine & Machinery Parts), Gotra : Self- Chaurbambar, Mama- Badwasiya, Contact : 68, Near Jeevan Jyoti Hospital, Avash Vikash Colony, Sector-1, Bodla, Agra-282007, Mob.: 9412261831, 9870978410 *(Dec.)*

★ **Manish Jain** S/o Sh. Umesh Chand Jain (Kante wale), DoB 08.03.1994 (at 4:40 AM, Gwalior), Height- 5'-8", Color Fair, Education- B.Tech. (Mechanical Engineer) NIT Bhopal, Occupation- Iron Business, Gotra : Self- Chorbumbar, Mama- Salavadia, Contact : Sh. Kushal Chand Kailash Chand Jain (Kante wale), (N.R. Industries), Lohiya Bazar, Lashkar, Gwalior, Mob.: 9893016050 *(Dec.)*

★ **Ashish Jain** S/o Late Sh. Pawan Kumar Jain, DoB 01.04.1990 (at 1:55 PM, Kota), Height- 5'-5.5", Education- B.Tech. (Civil), Occupation- Project Engineer in a renowned Construction Co. at Daman, Income 7.30 LPA, Gotra : Self- Chaurbambar, Mama- Kathumaria, Contact : 36, Basant Vihar Special, Behind Modi College, Kota-324009, Mob.: 9829242662, 7742736669, Email : pawankumar jain56@yahoo.com, pawan42662@gmail.com *(Dec.)*

★ **Abhishek Jain** S/o Sh. Mahesh Chand Jain, DoB 08.11.1988 (at 11:17 pm, Jaipur), Height- 5'-11",Education- B.Com, M.Com (ABST), MBA (Finance), CA Final (Pursing), Occupation- Working as Credit Manager in AU Small Finance Bank Ltd., Jaipur, Income 5.50 LPA, Gotra : Self- Baroliya, Mama- Sangarwasi, Contact : B-262 Hari Marg, Malviya Nagar, Jaipur-302017, Mob.: 9414044422, 9414775486, Email : maheshjn8@gmail.com *(Dec.)*

★ **Anshul Jain** S/o Sh. Pushpendra Jain, DoB 14.03.1994 (at 9:12 am, Agra), Height- 5'-11", Education- B.Com., Profession- Business, Gotra : Self- Salawadia, Mama- Maimuda, Contact : Jain Readymade and Book Store, Midhakur (Agra), Mob.: 9410006648, 8445463430 *(Dec.)*

★ **Rahul Jain** S/o Sh. S.C. Jain, DoB 29.01.1981 (at 10:20 am, Agra), Height 5'-9", Education- Graduate, LLB., Occupation- Lawyer, Practice in Civil Court, Agra & Panel Advocate of Banks, Income- Approx. 30,000 per month, Gotra : Self- Chorbambar, Mama- Javeria, Contact : 18/260, Munni Bhawan, Maithan, Agra-282003, Mob.: 9319821191, 8979247501, Ph.: 0562-2620070 *(Dec.)*

* * * * *

# आर्शीवाद

मातृ देवो भव, पितु देवो भव, आचार्य देवोभव, जीवन के उषाकाल से इन्हीं वाक्यों के साथ हमारी जीवन यात्रा शुरू होती है। यह हमारी जीवन यात्रा की शक्तियां है, जो हर मोड़ पर हमारी रक्षा करती हैं, मति बनाये रखती है और मंजिल तक पहुंचाती है।

इनके अभाव में जीवन का आनन्द बना नहीं रह सकता है। यह तो उन शाश्वत–मूल्यों में से है, जो किसी भी काल में कम महत्वपूर्ण नहीं होगा सामाजिक और शारीरिक मूल्य' बदलते रहते हैं। मन के आचरण बदलते रहते हैं किन्तु आत्मा का इस स्वाभाविक भाव कभी नहीं बदलता। आगे भी नहीं बदलेगा।

आर्शीवाद एक अभिव्यक्ति है। भावों का सम्प्रेषण है। इसमें भौतिक सुखों का सम्मिश्रण भी निहित है। आत्मीय और मानसिक धरातल का समावेश है। सम्प्रेषण तो भावों का होता है किन्तु माध्यम बनते हैं शरीर और वाणी हमारे यहां सुबह उठते ही माता–पिता एवं घर के सभी बड़ों को प्रणाम करने की परंपरा रही है। परंपरा तो संध्याकाल में प्रणाम की भी रही है। गुरू के चरण स्पर्श करने से पहले आप उनके बात नहीं कर सकते। दण्डवत करने तक की परम्परा के उदाहरण है, आज तक भी देखने को मिलते हैं।

हमारा सिर उर्जा का मुख्य केन्द्र है, जो सदा अंतरिक्ष से जुड़ा रहता है। शरीर में अनेक प्राणों का संचार सिर के माध्यम से होता है। इसी प्रकार हमारी हथेलियां और तलवे के विसर्जन में अग्रणी भूमिका निभाते हैं। प्रणाम और आर्शीवाद में सिर, पांव और हाथों का भी सर्वाधिक प्रयोग होता है। आप अपने बड़ो के पांव छूते हैं, तब उनकी उर्जा का प्रवाह आपकी ओर मुड़ता है।

आर्शीवाद देने वाला भी अपने सिर पर हाथ रखता है। एक सर्किट पूर्ण होता है और उर्जा की धारा चल पड़ती है। यदि भूलवश किसे बड़े साधक का तपस्वी का पांव छू तो करण्ट की तरह झटका भी लग सकता है। उर्जा अपने साथ कौनसी शक्तियां लायेगी यह इस बात पर निर्भर करता है कि आपने क्या सोच कर पांच छुये हैं। आर्शीवाद के साथ किन भावों का 'सम्प्रेषण' हुआ है आमतौर पर स्नेह, माधुर्य और दीर्घायु होने की कामना ही आर्शीवाद के मूल विषय होते हैं। वैसे अलग–अलग मनोकामनाओं और उद्देश्यों के लिये भी आर्शीवाद लिये जाते हैं।

आर्शीवाद में अच्छे भाव भी मिलते रहे इसके लिए केवल कुलीन होना ही पर्याप्त नहीं होता। आर्शीवाद देने वाले के मन को भी जीतना पड़ता है। यह कार्य सेवा और व्यवहार से ही संभव है। इसमें धन की आवश्यकता नहीं होती है। उर्जाओं को खरीदा भी नहीं जा सकता। भावनाओं को भी नहीं खरीद सकते। इनको कामना पड़ता है, अर्जित करना पड़ता है। स्वयं के मन में अच्छे भाव पैदा करने पड़ते हें। आर्शीवाद में मन के भावों का महत्व है। इसलिये दूर बैठे व्यक्ति को भी मन में सूचना मिल जाती है। मां–बाप और गुरू को आपकी सूचना सदा रहती है।

मन कहीं भी पहुंच सकता है। पलक झपकते ही आप दूर या पास कहीं का भी चित्र देख सकते हैं। मन में आत्मा का निवास है आत्मा सबमें एक है। अतः केवल मनोभावों का सम्प्रेषण ही प्रभावी हो सकता है। आर्शीवाद की उर्जा मन के प्राणों की वृद्धि करती है। व्यक्ति को तेजस्वी और क्षमतावान बनाती है।

शरीर में अनेक प्रकार की उर्जा के भण्डार है। इनका भी नियंत्रण आवश्यक है। आर्शीवाद की उर्जा इनका समभाव में रखती है। नियंत्रण में रखती है। व्यक्ति को अनुशासन में रखती है सात्वि गुणों का पोषण करती है। जिस प्रकार नित्य स्वाध्याय से व्यक्ति गुरूत्व को प्राप्त कर लेता है उसी प्रकार नित्य के आर्शीवाद से उसका गुरूत्व को प्राप्त कर लेता है। आप किसी अनजान की सहायता करके भी देख लें, उसकी आंखें से भी आपके लिए आर्शीवाद निकल ही जायेगा।

आर्शीवाद ग्रहण करने के लिये भी क्षमता पैदा करनी पड़ती है, क्योंकि देने वाले की उर्जा अपना कार्य तभी तो करेगी। ग्रहण करने वाले को समझ लेना चाहिए कि सारे विस्तार का मूल यही उर्जा है। राम भक्त हनुमान तो आर्शीवाद के सहारे ही भगवान बन गये, किन्तु उन्होंने स्वयं को कर्ता कभी नहीं माना। उनके तो सारे काम राम ही करते रहे। यही भाव आर्शीवाद को फलीभूत करता है।

आर्शीवाद दुर्लभ सम्पदा है। केवल भावनाओं से ही अर्जित हो जाती है। जीवन को आनन्दमय बनाने का इससे अधिक सरल उपाय और कोई नहीं हो सकता।

***–श्रीमति संतोष जैन***
*जय–पारस 102/117, मानसरोवर, जयपुर*

श्री आदिनाथ नमः

नया वर्ष, नई उम्मीद, नए विचार और नई शुरूआत
भगवान करे, आपका हर सपना हकीकत बन जाये

हमारे पूरे परिवार की तरफ से आप सभी को नववर्ष की

हार्दिक शुभकामनाएं

# आदिनाथ

## रेडीमेड गारमेन्ट्स एण्ड जनरल स्टोर

**चौक बाजार, मैन मार्केट, मिढाकुर ( आगरा )**

**देवेश जैन, दिशु जैन, सौरभ जैन**
**ममता जैन, दीपा जैन, मीनू जैन**
*मो.: 8979082704, 8006642402*

*(CR D-2416)*

TRAFO
Power & Electricals Pvt. Ltd.

# TRAFO POWER & ELECTRICALS PVT. LTD.

AN ISO 9001:2008 COMPANY

**PRODUCTS**

-POWER & DISTRIBUTION TRANSFORMERS

-PRESSED STEEL RADIATORS

-SPECIAL PURPOSE TRANSFORMERS

-PACKAGE SUBSTATION

CONTACT

Trafo Power & Electricals Pvt. Ltd.
C-20 Site-C U.P.S.I.D.C., Industrial Area, Sikandra,
Agra, Uttar Pradesh - 282007, India

Phone No : +91-562-3290391
Fax : +91-562-2640388
E-mail : info@trafo.co.in

KOTSONS

POWER & DISTRIBUTION

TRANSFORMERS

# *Export Award Winners*

**ACHIEVED 100% GROWTH IN A SINGLE YEAR**

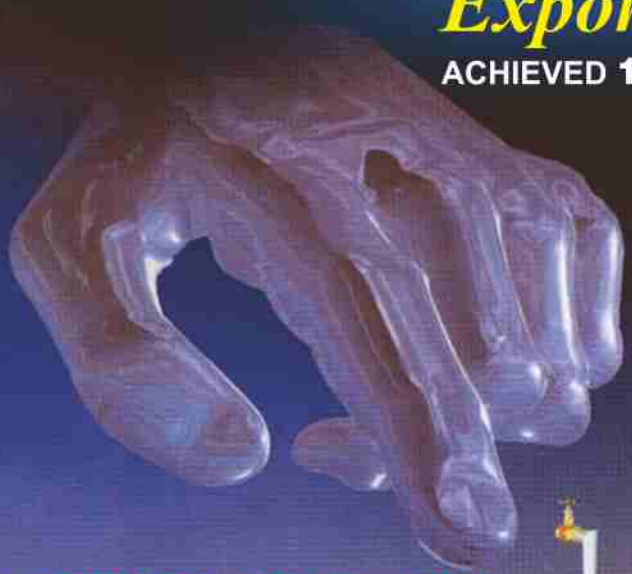

## KOTSONS PVT. LTD.

**(AN ISO 9001 : 2015 & ISO 14001 : 2015 CERTIFIED COMPANY)**

**Head Office and Unit-I**
**Alwar :** 217A, 218 to 220 & 230A MIA,
Desula, Alwar-301030
Rajasthan, INDIA
Tel.: +91-144-2881210, 2881211
Email : kotsons@kotsons.com

**Unit-II**
**Agra :** C-21, U.P.S.I.D.C., Site-C,
Sikandra, Agra-282007,
U.P., INDIA
Tel.: +91-562-2641422, 264-1675
Email : kotsons@kotsons.com

**Registered Office :**
**New Delhi :** A-208 IInd Floor,
R.G. City Centre, Motia Khan,
Pahar Ganj, New Delhi-110055, INDIA
Tel.: +91-011-43537540
Email : kotsons@kotsons.com

DNV

Accredited by the RvA

ISO 9001 QUALITY CERTIFIED
CERTIFICATE No. QSC-3360

**OHSAS 45001 : 2018**

**TRANSFORMING ELECTRICITY**
**EMPOWERING WORLD**

RNI NO. RAJHIN/2012/47438 Postal Registration No. JAIPUR CITY/434/2019-21



RERA Registration No.
RAJ/P/2019/1054
www.rera.rajasthan.gov.in

Pearl
Build Trust & Loyalty

Your perfect home is now
at a landmark address.

Pearl
FORTUNE
3 BHK Boutique Apartments

Disclaimer:- The image shown in indicative only and the actual view may differ from the one shown here.

16 Smart Home 3 BHK Vastu Friendly | Site : B-138, Mangal Marg, Bapu Nagar, Jaipur

Pearl
Build Trust & Loyalty

**Pearl India Buildhome (P) Ltd.**
"Pearl Suryavanshi", 401, A-5, Sardar Patel Marg,
C-Scheme, jaipur - 302001. INDIA, Ph.: +91 141 4014044

Dr. Raj Kumar Jain +91 9414054745
Ar. Vijay Kumar Jain +91 9829010092

2 Decades of Excellence | 3600 Villas + Plots | More than 500 Apartments | 22 'Pearl' Tower | 6 Townships

**PRINTED MATTER**
*If Undelievered, please return to*
**श्री चन्द्रशेखर जैन** *(संयोजक)*
86, श्री विहार कॉलोनी होटल क्लार्क,
आमेर के पीछे, जे.एल.एन. मार्ग,
जयपुर-302018 (राज.)

*पत्रिका स्वामी - अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा (रजि.) के लिए मुद्रक/प्रकाशक श्री चन्द्रशेखर जैन, 86, मगन विला, श्री विहार कॉलोनी, होटल क्लार्क आमेर के पीछे, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर-302018 ने गणेश आर्ट प्रिंटर्स, जे-51, कृष्णा मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर से मुद्रित, सम्पादक : श्री प्रकाश चन्द जैन।*